ISBN : 978-93-5906-245-7

रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान

▪राजीव अग्रवाल

▪अशोक कुमार

▪विकास तिवारी

रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल

डीन - शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

अशोक कुमार

एम.ए. (हिंदी साहित्य), एम.एड.

विकास तिवारी

एम.ए. (राजनीति शास्त्र, अंग्रेजी साहित्य तथा शिक्षाशास्त्र), बी.एड.

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लाँघा है वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है।वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, **रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान** इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है, जिसके अन्तर्गत, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन के उद्देश्य, शोध विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता, पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है**,** जिसके अन्तर्गत शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में रामावतार साहू जी का जीवन परिचय, वंश परम्परा, अध्ययन यात्रा, अध्यापन यात्रा, कवि सम्मलेन तथा कवि गोष्ठियों में सहभागिता एवं सम्मान, यात्रा के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में रामावतार साहू जी की साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है। जिसके अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों का वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय में साहू जी की कुछ प्रेरक कविताएँ लिखी हैं।

षष्ठ अध्याय पुस्तक का अन्तिम अध्याय हैं, जिसमें निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, शैक्षिक उपादेयता एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य सोद्देश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में रामावतार साहू जी की शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतएव यदि अनुभावी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

राजीव अग्रवाल

अशोक कुमार

विकास तिवारी

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय
अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: एक विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ज्ञान, तकनीकी दक्षता उचित आचरण, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक उत्कर्ष पर केन्द्रित है। शिक्षा, समाज में एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तान्तरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरन्तरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है। जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है। तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष्' का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की क्रिया है। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं। तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है। व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में; व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण-प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है, व करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना-सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना-सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली

एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर सम्बन्धित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

शिक्षा को एक प्रक्रिया माना जाता है। प्रक्रिया का अर्थ है एक विशेष प्रकार की क्रिया, जिससे मानव में कुछ विशेषताएँ आ जाती है। मानव कुछ जन्मजात शक्तियों के साथ इस संसार में आता है। इन जन्मजात शक्तियों के साथ मानव को कुछ बाहरी शक्तियाँ (भौतिक और सामाजिक शक्तियाँ) भी प्राप्त होती हैं। मानव की इन जन्मजात व बाहरी शक्तियों में क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। यही क्रिया-प्रतिक्रिया शिक्षा की प्रक्रिया है। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ के अनुसार शिक्षा मानव की आन्तरिक शक्तियों का विकास करने की प्रक्रिया है। मानव में जो जन्मजात आन्तरिक विद्यमान होती है। उनका विकास वातावरण के सम्पर्क में से होता है। मानव अपने विकास के लिए जन्म से प्राप्त शक्तियों और भौतिक व सामाजिक शक्तियों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु क्रिया-प्रतिक्रिया करता रहता है। इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप मानव ज्ञान व अनुभव प्राप्त करता है, और वह सीखता है। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं। तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है। व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है, व करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते है। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्र निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

1.2.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण को लेकर भारत सरकार ने कई आयोगों का गठन ही नहीं किया। अपितु उनकी सलाह पर कार्य किया। परन्तु फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके सम्बन्ध में कोठारी आयोग 1964 ने कहा है- बार-बार सलाह देने के पश्चात भी दुर्भाग्य की बात यह है। कि विद्यालय स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है। और अभिभावक तथा विद्यार्थियों का सबसे आखरी चुनाव होता है। शिक्षा का व्यवसायीकरण का सामान्य शब्दों में अर्थ होता है। किसी व्यवसायिक में प्रशिक्षण अर्थात विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना ताकि वह अपना जीवन यापन सुगमता से कर सके। शिक्षा के साथ-साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल व्यक्ति बनाए।

1.2.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

अधिकांश लोगों को आश्चर्य होता है। कि स्कूलों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाना क्यों आवश्यक है? क्या आप अपने आप को ऐसे परिदृश्य में पाते हैं? जहाँ राजनीति और शिक्षा के बीच सम्बन्धों के सम्बन्ध में एक पराजय होती है। बराक ओबामा को आदर्श उदाहरण के रूप में उपयोग करने में संकोच न करें। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को आधुनिक युग के महानतम नेताओं में से एक माना जाता है और उनकी अनुकरणीय नेतृत्व शैली सबसे शानदार घटनाओं में से एक है जिसे कई लोग सीखना चाहते हैं। इसलिए, उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ईर्ष्या पूर्ण नेतृत्व की स्थिति कैसे मिली, इसलिए राजनीति और शिक्षा को एक साथ लाने वाले अधिक सत्रों को एकीकृत करने की आवश्यकता को खारिज करने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण के रूप में पर्याप्त होना चाहिए। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक छात्र के पढ़ने, समझ और समझ में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है। अशिक्षित नेताओं द्वारा शासित दुनिया की कल्पना निराधार है। यह प्रशंसनीय नहीं लगता, है ना? इसीलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है। कि बुक स्मार्ट होना प्रभावी नेतृत्व के बारे में बहुत कुछ नहीं दर्शाता है। लेकिन फिर भी यह कई घटनाओं में से एक के रूप में मदद करता है। जो एक महान नेता बनाने के लिए आवश्यक है। शिक्षा किसी की सोच को कंही अधिक विस्तृत करती है। हालाँकि हमें

स्कूलों में अधिक राजनीति शुरू करने में सावधानी बरतनी चाहिए। शिक्षा प्रणाली को वामपन्थी झुकाव के लिए जाना जाता है, विश्वविद्यालयों को और अधिक लेकिन नवीनतम आम चुनाव में वामपन्थी दलों के पक्ष में पूर्वाग्रह अधिक था। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए। कि हमारे भविष्य के नेताओं और राजनेताओं को राजनीति सिखाते समय कि हम कुछ हद तक तटस्थ रुख रखते हैं। जाहिर है कि हम पूर्वाग्रह और रुख को समाप्त नहीं कर सकते हैं लेकिन हम लेबर पार्टी या लिब डेम्स के विचारों के बजाय एक सन्तुलित राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। दूसरा जनमत संग्रह दल या मार्क्सवादी समाज हमारे बच्चों को मार्क्सवाद से लेकर फ़ासीवाद तक और साथ ही बीच में सब कुछ के राजनीतिक स्पेक्ट्रम की चरम सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए और यह सर्वोपरि होना चाहिए कि बच्चों को सूचना अन्तराल और अपना मन बनाने में सक्षम होना चाहिए।

राजनीति विज्ञान और कानून उन सर्वोत्तम पाठ्यक्रमों के रूप में पर्याप्त हैं। जो चतुराई से राजनीति और शिक्षा के बीच के बन्धन को जोड़ते हैं। शिक्षण संस्थानों में या तो प्रभावी नेतृत्व प्रणाली के माध्यम से या पाठ्यक्रमों के माध्यम से राजनीति को शामिल करना भविष्य के नेताओं को आकार देने में सहायता करता है। साथ ही जनता को यह भी शिक्षित करता है, कि प्रशासनिक प्रक्रियाएँ कैसे होती हैं? हर यात्रा एक कदम से शुरू होती है। ऐसे मामलों में स्कूलों में राजनीतिक घटनाएँ होने से छात्रों को अपने भविष्य के कैरियर की तैयारी करने में मदद मिलती है। यह तय किया जाना चाहिए कि राजनीति न केवल राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होती है। बल्कि कॉर्पोरेट जगत में भी होती है। ऐसे वातावरण के सम्पर्क में आने वाले छात्र नीति सलाहकार बनने के साथ-साथ सरकार और कॉर्पोरेट एजेंसियों दोनों के लिए उत्साही शोधकर्ता बनने का एक बेहतर मौका देते हैं। इसलिए राजनीति और शिक्षा उनके सहजीवी सम्बन्धों के मूल्य को दर्शाती है क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे को फिर से परिभाषित करते हैं।

राजनीति और शिक्षा दो ऐसे क्षेत्र हैं। जो सीखने पर केन्द्रित समान विषयों पर निर्भर करते हैं। इसका तथ्य यह है, कि हर शिक्षक कभी छात्र था। हर नेता कभी प्रशिक्षु नेता था। हालाँकि एक बात स्थिर रहती है; ज्ञान सर्वोपरि है। इन घटनाओं को यह बताने के लिए आवश्यक उदाहरण होना चाहिए। राजनीति और शिक्षा में हमेशा एक सहजीवी बन्धन रहेगा।

1.2.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए। पुरातन गुरु-शिष्य परम्परा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरू का सम्मान करते हुए हैं। शिक्षा पाते थे। परन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिसका कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी हम शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं। लेकिन वे यह जानने का प्रयास नहीं करते कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। प्राचीन गुरू-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिक को भी गम्भीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा। वर्तमान में शिक्षक छात्र सम्बन्धों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें छात्र ही दोषी नहीं बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। देखने में आ रहा है, कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु शिष्य सम्बन्ध निःस्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं। जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है, कि अभिभावक, गुरू, छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुर्न प्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग कक्षाएं व निजी स्कूल का उदय का कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है। न ही योग्य शिक्षक जिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया जो अब चरम पर है। इस समानान्तर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है।

1.2.4 शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई हैं। तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों में आधारभूत ढांचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएँ संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते है और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है, और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। सरकारी स्कूल की बात करें तो यहाँ चार वर्षों से कोई अध्यापक है ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती हैं साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती है। यह स्थिति देश के सम्पन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है कि चार सालों में स्कूल में अध्यापक भी नहीं नियुक्त कर सकती। गाँव के स्कूल में एक अध्यापिका है तो यह तीन साल में स्कूल गई है। यहाँ बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एनआरआइ ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिका की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है, कि वहाँ पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा ही। करीब पाँच साल पहले केन्द्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं। अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए। क्योकि शिक्षा की उपेक्षा देश के भविष्य से खिलवाड करने जैसा है।

1.2.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

भारतीय संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। और सभी सिद्धान्तों का एक मात्र उद्देश्य है। मनुष्य का कल्याण करना। मानव जीवन में संस्कार और संस्कृति का बहुत महत्व है। संस्कार सम्पन सन्तान ही गृहस्थ की सफलता और समृद्धि का रहस्य है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता का

कर्तव्य बनता है कि वे अपने वच्चों को नैतिक बनाएं और कुसंस्कारों से वचाकर वचपन से ही उनमे आदर्श और संस्कारों का ही बीजारोपण करें। लेकिन आज भारतीय संस्कृति और संस्कार सब लुप्त होते दिखाई दे रहे हैं। आज बालकों में हिंसा तथा व्यभिचार की प्रवृति बढ़ रही है। आखिर क्यों? आज युवा वर्ग परिश्रम और धैर्य से दूर होता जा रहा है। समाज में सात्विक प्रवृति का दमन होता जा रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ पूरा विश्व हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को अपना रहा है। और हम अपनी संस्कृति को भूलकर उनकी संस्कृति को अपना रहे हैं। यह हमारी मूर्खता नहीं तो और क्या है? आज हम अपनी भारतीय संस्कृति की अवहेलना करने लगे हैं। संस्कारो की उपेक्षा एवं पश्चिमी जीवन शैली के अंधानुकरण से समाज में अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जैसे कि आहार प्रणाली में बदलाव से अनेक बीमारियाँ, शिक्षा पद्धति में वदलाव से अनेक मानसिक कुरीतियाँ और पाश्चात्य रहन-सहन से अनेक सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न हो गयीं हैं।

1.2.6 योग्य शिक्षकों का अभाव

"भारतीय शिक्षा प्रणाली बुरी नहीं है। बल्कि समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षण के जुनून या वित्तीय कारणों के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में नहीं आते हैं। दुर्भाग्यवश हमारे देश में शिक्षक, विशेषकर सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्या के रूप में देखा जाता है। इसमें सारा ज़ोर अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केन्द्रित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिज़ाइनिंग में शिक्षकों के फीडबैक को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है। तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता और न ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण थी। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए। शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान

युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए, शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ। परन्तु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

आधुनिक समय में योग्य शिक्षको का अभाव है। जहां अयोग्य शिक्षकों का बाहुल्य है। जिसमें शिक्षकों के द्वारा किये गए कार्यो का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। उनकी लिखी हुयी कृतियाँ को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए। जिसमे शोधार्थी ने बाँदा जनपद के एक सुयोग्य अध्यापक **रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान** पर लघु शोध करने का निर्णय किया।

1.4 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न समस्या का चुनाव किया गया—

"रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान"।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन का निश्चित दिशा प्रदान करता है, जिससे अध्ययन सरल व सुव्यवस्थित सुगम हो जाता है। अतः इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- रामावतार साहू जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- रामावतार साहू जी की साहित्य सर्जना का अध्ययन करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

1.6 शोध विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसंधान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का अविष्कार किया है। जिसका प्रयोग समस्या प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघु-शोध का अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसन्धान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान का महत्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार ''वर्णनात्मक अनुसन्धान 'क्या है' का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है। अभ्यास जो चालू है। विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रहीं है। प्रक्रियायें जो चल रही है, अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे हैं अथवा नयी दिशायें जो विकसित हो रही हैं उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।'' वर्णनात्मक अनुसन्धान का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है- वर्तमान स्थिति क्या है ? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक अनुसन्धान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय के ज्ञान प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता समस्या से सम्बन्धित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं करता है बल्कि वह समस्या से सम्बन्धित विभिन्न चरों में आपसी सम्बन्ध ढूँढने का प्रयास करता है साथ ही भविष्यवाणी भी करता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के सम्बन्ध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में रोगात्मक लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान किया जाता है। अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी रोगी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसकी जीवन की सभी तरह की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारम्भिक सूचनाएं, अतीत की घटनायें तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती है तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किये जाते हैं। जानकारी में साक्षात्कार प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण तथा मापनी आदि का प्रयोग किया जाता है पर व्यक्ति का गहन अध्ययन, विकास का क्रम तथा जीवन की समस्याएँ जानने की समुचित विधि है। इस विधि में

अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष, उसके माता पिता, पारिवारिक जन, रिश्तेदार, पडोसी, विद्यालय, मित्रगणों, सहयोगियों एवं सम्बन्धित अभिलेखों से सूचना एकत्रित कर किसी व्यक्ति, स्थिति, समूह अथवा संस्था के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रस्तुत अध्ययन में रामावतार साहू जी के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया है वे हिंदी के एक आदर्श शिक्षक होने के साथ साथ एक लेखक एवं कवि के रूप में प्रतिष्ठित है तथा अपनी लेखनी से जनसामान्य को लाभान्वित कर रहे है**,** निश्चय ही यह लघु शोध विशेष कर हिंदी भाषा के शिक्षकों के लिए प्रेरणा दायी है और भी जीवन में काव्य काव्य के समन बिखेरने में सक्षम हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी एवं जन सामान्य भी इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त कर हिंदी भाषा एवं संस्कृति में उत्थान अपना योगदान दे।

द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसन्धान की प्रक्रिया में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का वैज्ञानिक तथा महत्वपूर्ण चरण है। क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है। जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पथ होते हैं। ज्ञान को एकत्रित करना, दूसरी पीढी को ज्ञान का स्थानान्तरण, ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यावहारिक आधार पर सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर चिन्तन कर, परिष्कृत कर अथवा पूर्ण व आशिंक परिवर्तन करके निरंतर विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है। कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें। अपनी समस्या से सम्बन्धित जितना भी यथा सम्भव उपलब्ध पुस्तकें, ग्रंथ, पत्रिकाएँ व गतवर्षों में एकत्रित किये गए अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरण से अपने को पूर्व परिचित करे जिससे यह ज्ञात होता है। कि समस्या से सम्बन्धित किस पथ पर या किस पक्ष पर कार्य हो चुका है। उसमें शोध की कौन सी प्रविधि प्रयुक्त की गई। और समस्या कौन सा पक्ष ऐसा है जिस पर अध्ययन नहीं किया गया है। व्यावहारिक आधार पर मानव संचित ज्ञान को प्राप्त कर, चिन्तन कर, परिष्कृत कर अथवा पूर्ण या आंशिक परिवर्तन करके निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता रहता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं। ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना, और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धान्तों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता हैं। कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं ‘‘डॉ० सी. वी. रमन के नियमानुसार कोई भी शोध का सम्बन्धित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है। जब तक उस शोध से सम्बन्धित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो।’’ अनुसन्धान चाहे किसी भी क्षेत्र का हों उसका लक्ष्य सम्बन्धित

क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है कि मानव की इसी प्रकृति के फलस्वरूप ज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई हैं। तथा सदियों से उसका एक क्रम निरन्तर चला आ रहा है। ज्ञान की यह प्रक्रिया अनन्त है जब तक मानव जीवन है। उसकी यह ज्ञान-तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती है। क्या हो कैसा हो या होना चाहिए ? इन प्रश्नों से अनभिज्ञ मानव जीवन सदैव जिज्ञासा में रहता है। उसकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने सदैव ही कल के ज्ञान को नवीन रूप प्रदान किया है।

2.2. शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित है—

1**. आबी शादाब (2009)** ने डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—

- दोनों के विचारों में पारम्परिकता एवं आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।
- जाकिर साहब व कलाम साहब दोनो के अनुसार शिक्षा बच्चों के सर्वोत्तम का सर्वागीण विकास है दोनों विचारकों के इस प्रयत्न को भी शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते है।
- अनुशासन के संबंध में भी दोनों के विचार अत्यन्त प्रासंगिक है। आतंरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन की चर्चा दोनों विचारक करते है। शारीरिक दण्ड को बिलकुल समाप्त करने के पक्ष में है। वर्तमान समय में भी आंतरिक रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष में है।
- पाठ्यक्रम में इन दोनों विचारको ने सहसंबंध, समन्वय, समाकलन एवं क्रिया पर बल दिया है।

2. किरन सिंह (2008) ने "रवींद्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता'' का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक रूप में लिया है। उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है।

- टैगोर भी अपने स्कूल की स्थापना नगर के कोलाहल से दूर शान्त वातावरण एवं प्रकृति की सुरम्य गोद में करना चाहते थे। जहाँ छात्र और अध्यापक शिक्षा की साधना में लग सके।
- टैगोर चाहते थे कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीक हो और अन्तिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। मानव की जो वास्तविता ही मानवता है।
- बालक के अन्दर विश्वधुत्व की भावना, भू-मण्डलीयकरण की बात होती जा रही है संचार के माध्यम बढ़ते जा रहे है। बालक को देश-विदेश के प्रति भी प्रेम को बढ़ावा मिले।

3. अनन्त बहादुर सिंह (2008) ने 'मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन' किया और यह पाया कि-

- रवीन्द्र नाथ ठाकुर हमारे देश के न केवल एक उच्चकोटि के कवि, गायक, संगीतज्ञ, नाट्यकार अभिनेता, उपन्यासकार निबन्ध लेखक, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, मानवतावादी तथा राष्ट्रवादी थे, वरन वे एक कट्टर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी थे। वे सच्चे अर्थ में एक विश्व नागरिक थे जिनकी राष्ट्रीयता उनकी विशाल अन्तर्राष्ट्रीयता के अनुरूप थी।
- इनके सम्बन्ध में लिखते हुये आर० श्रीनिवास आयंगर लिखते हैं, कि टैगोर संसार के महानतम शिक्षाशास्त्रियों में अद्वितीय स्थान रखते हैं, क्योंकि उन्होंने एक शिक्षा दर्शन का विचार किया या निकाला और अपने दर्शन को कार्य क्षेत्र में अनूदित करने में उच्च मात्रा की सफलता प्राप्त की।
- रविंद्र नाथ टैगोर के सम्बन्ध में डॉ० सुरेन्द्रनाथ दास गुप्ता ने लिखा है, की प्रतिभा सम्पन्नता अद्वितीय और अतुलनीय थी और अन्यत्र कहीं भी यह प्रतिमा अथक परिश्रम से संबंधित नहीं पाई जाती है जैसा की उनमें सभी का कथन है उनका व्यक्तित्व ऐसा चित्र हमारे सामने उपस्थित करता है जो मानव इतिहास में अद्वितीय है। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने कहा था कि यह गुरुदेव की उपलब्धि है, जिससे कि उन्होंने इस रिक्त स्थान को अपने निजी प्रयत्नों से भर दिया यह संकेत शन्ति निकेतन की ओर है। प्रो० हुमायूँ कबीर का कथन है कि टैगोर ने परम्परा को बिना तोड़े हुए शिक्षा के

विचारों में क्रान्ति ला दी है, इससे स्पष्ट है कि टैगोर ने भारतीय शिक्षा में क्या प्रगति और परिवर्तन किया है।

4. रामनिवास वर्मा (2005) ने "भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता " शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि—

- भारतीय संस्कृति मूलतः एक जीवन मूल्य आधारित जीवन पद्धति है। जो अनिवार्य रूप से भारतीय लोकमानस को मूल्य निकायों की ओर निर्देशित करती है। ये मूल्य निकाय भारतीय जनजीवन पद्धति के प्रेरणा स्रोत हैं तथा सदैव से उसे उत्कृष्ट उपलब्धियों को प्राप्त कर अद्वितीय मानव व्यवस्था के निर्माण की दिशा में अग्रसर करते रहे हैं। भारतीय संस्कृति अपने सरलतम अर्थ में भी लोकजीवन में जीवन मूल्यों के अनुप्रयोग व विनियोग का ऐसा अनन्य उदाहरण प्रस्तुत करती है जो भारतीय जनजीवन को गति प्रदान करता है तथा मानव सृजनात्मक के घटकों को प्रेरित विकसित कर निरन्तर नये भारतीय जीवन मूल्यों के निर्माण का कार्य करता है।
- सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से भारतीय जीवन मूल्यों को विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों से प्रादुर्भूत हुआ माना जा सकता है। ये विशेषज्ञता के क्षेत्र भारतीय जीवन मूल्यों को तर्काधार प्रदान करते हैं।

5. रेनू सिंह (2008) ने "भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया और यह पाया कि—

- आधुनिक काल में प्रगतिशील कही जाने वाली शिक्षा के अनेक गुण शाहू जी के शैक्षिक विचारों में विद्यमान हैं। स्वतन्त्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति, एकाग्रता, चिन्तन, समाजीकरण, सृजनात्मक, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, आदर, सर्वांगीण विकास, शिक्षक का सम्मानीय स्थान आदि सभी तत्व इसमें हैं, जो शिक्षा के लिए प्रासंगिक, उपयोगी एवं सार्थक हैं व इन्हें उच्चतम शिक्षा शास्त्री के रूप में अधिष्ठित करती है।

- इस महान शिक्षा दार्शनिक द्वारा निश्चित शिक्षा के सिद्धान्त हमारे देश और इस काल के लिए ही नहीं अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले हैं, सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धान्त कहा जा सकता है।
- इनके शैक्षिक विचारों को आधुनिक शिक्षा में अपना कर भारत की उद्देश्य विहीन शिक्षा पद्धति का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

6. नीलम सिंह (1999) ने "भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता" शीर्षक पर शोध का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- मिशनरियों का शैक्षिक योगदान भारतीय इतिहास में सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। यद्यपि मिशनरियों ने विशुद्ध परोपकारिता की भावना से स्कूल संचालित नहीं किए थे बल्कि इनका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। फिर भी इन लोगों ने स्कूल की कार्य प्रणाली तथा संगठन में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण सुधार किये जिसके कारण स्कूल के स्वरूप तथा संरचना के विषय में हमारी धारणाएँ स्पष्ट हो सकीं।
- सर्वप्रथम मिशनरियों ने हम लोगों को स्कूल की नवीन अवधारणा प्रदान की। इसके पहले स्कूल क्या है? और स्कूल किसे कहते है? इस सम्बन्ध में हमारे विचार सुस्पष्ट नहीं थे। मिशनरियों के आगमन से पूर्व देशी पाठशालाओं की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। ये पाठशालाएं अधिकांशतः टूटे-फूटे मकानों, गोशालाओं, अस्तबलों या किसी ताल्लुकेदार के मकान एक हिस्से में लगा करती थीं। इस प्रकार स्कूल क्या है? तथा स्कूल में क्या कार्य होगा? जन साधारण के समझ में नहीं आता था। मिशनरियों ने सबसे पहले विद्यालय को सार्वाधिक शिक्षा का केन्द्र माना और भारत में साविधिक शिक्षा की नीव डाली। इस प्रकार मिशनरियों के द्वारा स्कूल के लिए किये गये, साविधिक कार्यक्रम को देखकर वर्तमान समय में भारतीयों ने उनकी शिक्षा प्रणाली से सीखकर साविधिक शिक्षा के कार्यक्रम को अपनाया।

- मिशनरियों के आगमन के पूर्व भारत में देशी शिक्षा प्रचलित थी। देशी शिक्षा के पाठ्यक्रम अत्यन्त संकुचित तथा अपर्याप्त होते थे। देश की निर्धनता देशी शिक्षा की अवनति का प्रधान कारण थी। देश की अधिकांश जनता निर्धन होने के कारण अपने बच्चों को नाम मात्र तक की फीस तक नहीं दे पाते थे। देशी शिक्षा के पतन के बाद यूरोपीय जातियों में प्रविष्ट किया इसके साथ ही वहां की यूरोपीय मिशनरियाँ भी आयी। जिन्होंने धर्म प्रचार के लिए शिक्षा को अपना माध्यम चुना और अनेक प्राथमिक विद्यालय खोले प्राथमिक शिक्षा के प्रारम्भिक प्रयास निशनरियों द्वारा किये गये। इनका उद्देश्य अपनी बस्ती के बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध करना था शिक्षा द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार करना था।

7. **बाबूलाल तिवारी (**1996-97) ने वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन किया और यह पाया कि—

- पं. दीनदयाल जी एक सन्त राजनेता थे। शिक्षा संस्कार एवं धर्म उनकी प्रमुख अभिधारणायें हैं। वे लोकतन्त्र के लिए लोकमत परिष्कार को आवश्यक मानने वाले, अर्थशास्त्र नियंत्रित उद्योग के विरोधी एवं धर्म नियंत्रित अर्थ के पक्षधर थे। समाज को नियंत्रित करने वाली शक्ति राजनीति में नहीं होती वरन् संस्कृति में होती है उनका ऐसा मन्तव्य था इसीलिए 'संस्कृति ' उनका प्रिय विषय बनी । अतः ये नेता कम सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यकर्ता ज्यादा थे । उनका ध्यान राजनीति की अपेक्षा सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने वैचारिक चिंतन पर अधिक था।

- दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की सभी विचारधाराओं को अपूर्ण एकांगी एवं प्रतिक्रियावादी मानते थे। पश्चिम द्वारा मानव को रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं वाला प्राणी निरूपित किये जाने को असंगत तथा राजनैतिक प्राणी' 'सामाजिक प्राणी' या आर्थिक प्राणी की संज्ञा को एकांगी मानते थे। उन्होंने माना है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मानव की व्याष्ट व समष्टिगत आवश्यकता है। इन चारों पुरुषार्थों के अनुसार ही हमारी राजनीतक आर्थिक और सामाजिक विचारधाराओं को विकसित किया जाना चाहिए इसी चिन्तन से ही उनका एकात्म मानववाद' प्रकट हुआ।

8. डॉ० शशिकांत शर्मा (2007) ने "गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- गिजू भाई शिक्षा द्वारा स्वातंत्र्य, निर्भयता, स्वावलम्बन, सत्य, प्रेम, अहिंसा, त्याग, मैत्रीभाव, दया, अपरिग्रह, सहिष्णुता, सेवाभाव, सामाजिक संवेदनशीलता, स्वच्छता, सदाचरण, सादगी व सरलता, सद्-असद् विवेक, वैज्ञानिक अभिवृत्ति जैसे मूल्यों का विकास करने पर बल देते हैं। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार, सौन्दर्य, प्रेम, स्वाधीनता, नियमन व स्वातंत्र्य जैसे मूल्यों को अत्यन्त मौलिक रूप से परिभाषित किया है।

- गिजू भाई कहते हैं कि मनुष्य शरीर की शक्ति बढ़ा सकता है, बुद्धि का वैभव प्राप्त कर सकता है, परन्तु अगर मनुष्य आत्मा की शुद्धि प्राप्त करने में पूरी जिन्दगी व्यतीत कर दे तब भी सफलता दूर ही रहेगी। यह विकास इतना कठिन इतना सूक्ष्म है कि मात्र कथा कहानी सुनाकर या उपदेश देकर नहीं किया जा सकता है वे कहते हैं कि सत्य पाठ पढ़ाकर आलक से सत्य की अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति या तो मूर्ख होता है, अज्ञानी होता है या ढोंगी इस प्रकार गिजू भाई उपदेशात्मक रूप से नीति शिक्षण की व्यर्थता सिद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण का राग अलापने वालों की नसों में अनीति के भयंकरतम कीटाणु घुस गये लगते हैं। चूंकि वे अपने अंदर की अनीति से भय खाते हैं, उससे लड़ने में सक्षम नहीं है, अतः उसे दुनिया से हटाने के लिए लड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण मनुष्य को आत्मा की स्वतंत्रता से भ्रष्ट करता है। मनुष्य स्वयं अनीति पर चलता है पर चाहता है कि बालक नीतिवान बने यह कदापि सम्भव नहीं है।

- गिजू भाई बालक को प्रकृति शिक्षा दिये जाने का प्रबल समर्थन करते हैं। उनका कहना था कि अपने बालक को प्रकृति से दूर रखकर क्या हम उसको देव बनाएंगे अथवा दानव? प्रकृति द्वारा दिया गया शिक्षण ही गिजू भाई की दृष्टि में उत्तम सामाजिक शिक्षण है। इस शिक्षण से उसका नैतिक विकास सहज स्वाभाविक बनता है और वह धार्मिक विकास के सुदृढ़ आधार के रूप में चिरस्थायी रहता है। प्रकृति शिक्षण में स्व-शिक्षण का मूल भी निहित है गिजू भाई कहते हैं कि प्रकृति की शिक्षा धैर्य एवं विश्वास की पोषक होती है। प्रकृति ही मनुष्य की आत्मा एवं देह की प्रथम धाय है। अतः उसे चाहिए

कि वह बाल्यावस्था से ही प्रकृति के अवदान से अपने प्राणों को भर ले। अपने आत्मिक विकास के तत्व उसे प्रकृति से ही ग्रहण कर लेने चाहिए।

9. सुधा तिवारी (2009) ने "लोकतान्त्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन किया और यह पाया कि—

- सदियों से पराधीनता के कारण अपनी गरिमामयी संस्कृति से अनभिज्ञ भारतीय जनता को पुनः चेतन तथा सचेष्ट करने के लिए भारतीय विचारकों के विचारों को अपनी परिस्थिति के अनुसार कार्य करना पड़ा, न कि वे इसके स्थान पर पश्चिमी विचारकों से विचार सहमति या असहमति प्रगट करने का कार्य करते। अतः इतना कहना ही पर्याप्त है, कि अपने क्षेत्र और अपने कार्य के अनुरूप उन्होंने शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया। भारतीय विचारकों में प्रतियोगिता की भावना नहीं थी वरन् जीवन के सच्चे मूल्यों की खोज करना। जो कि काल के गर्त में समाधिस्थ कर दिये गये हैं उनको पुनः जागृत कर स्मरण करना ही उनकी शिक्षा का लक्ष्य था।
- कुछ मानवों को ऐतिहासिक घटनायें बनाती है, जब कि कुछ लोग स्वयं इतिहास का निर्माण करते हैं। महात्मा गाँधी स्वयं ऐसे पुरूष थे। जिन्होंने अपनी मस्तिष्क मन व हृदय की विशेषताओं, गुणों तथा महान कार्यों से अपना स्वयं का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं एक इतिहास का निर्माण किया था। उन्होंने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रभावी व्यक्तित्व से नवीन भारत का निर्माण किया था और एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विचारक के रूप में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था।
- महात्मा गाँधी के विचार परिवर्तित होने वाले वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग में पूर्ण संगति रखते हैं। यदि हम उनकी शिक्षाओं और दार्शनिक विचारों को अपनाने में समर्थ हो सकें तो रामराज्य' एवं नये स्वर्ण युग का निर्माण कर सकते हैं।

10. शशि मिश्रा (2002) ने "समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—

- भारतीय दृष्टि में दर्शन और जीवन इतने सम्पृक्त रहे हैं कि इनमें अन्तर नहीं देखा गया। प्राचीन काल में सम्पूर्ण जीवन का क्षेत्र दर्शन का क्षेत्र था। महर्षिगण तपस्या करके सत्य का दर्शन करते थे तथा जीवन में

उतारते थे एवं अपने व्यवहारपरक अनुभव की शिक्षा दूसरों को प्रदान करते थे। भारतीय दार्शनिकों के सामने दुखों के आत्यान्तिक नाश तथा पूर्ण आनंद अथवा मोक्ष की प्राप्ति का लक्ष्य था। उन्होंने अपने-अपने दृष्टिकोण से उसकी प्राप्ति का मार्ग शोधा था, अतः उनमें बीच की कुछ बातों में भिन्नता होने पर भी कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर साम्य है। सर्वश्री सतीश चन्द्र चट्टोपाध्याय एवं वीरेन्द्र मोहनदत्त ने नैतिक व आध्यात्मिक बिन्दुओं में समानता निरूपित की है।

- भारत के सभी दर्शनों का उद्देश्य पुरुषार्थ साधन रहा है।
- दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असन्तोष से होती है, परन्तु आध्यात्मिक मनोवृत्ति के कारण उसमें आशा का संचार होता रहता है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

शोधकर्ता ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का एक अध्ययन, 'मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता, भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन, भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता, वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन, लोकतान्त्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन तथा समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। किन्तु **रामावतार साहू जी के शैक्षिक योगदान** पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघु शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1. जीवन परिचय

बुन्देलखण्ड की धरती पर जन्मे रामावतार साहू जी का जन्म 1 जनवरी, 1951 को अतर्रा (बाँदा) में हुआ। इनका बचपन अत्यंत गरीबी में बीता। इनके पिता जगन्नाथ साहू तथा माता भगवनिया देवी (उर्फ भागीरथी देवी) दोनों ही अशिक्षित एवं श्रमजीवी थे। इनके पिता जी आजीविका के लिए तांगा चलाते थे।
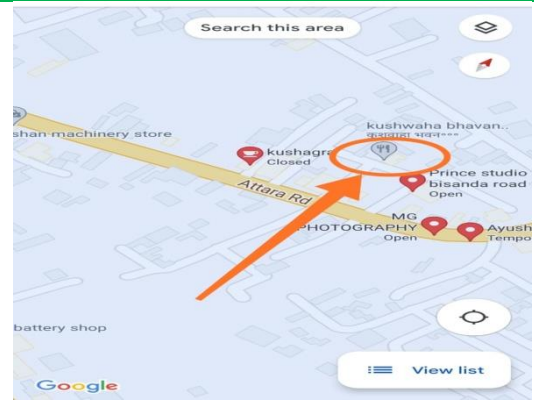
इनके जीवन की झलक 'आत्मकथ्य' नमक काव्य रचना में अभिव्यक्त होती है—

मैंने देखे जितने सपने सब, सब सपनों का सार एक है,

लगा हुआ क्रियान्वयन में, सबके साथ विचार एक है।

दीनहीन की पीड़ाओं से पीड़ित होकर मैं भी रोता,

यदि यथार्थ में दोनों का साथी बन जाता अच्छा होता।

आम आदमी बन जीता हूँ, साधक अभी नहीं बन पाया,

व्यथित हृदय के घाव मिटाऊँ, चिन्तन का आधार एक है।

बीता बचपन गुजरा यौवन, तैर रहा गम के दरिया में,

कहते कुछ अभिशप्त परिंदा, सोच रहा कैसी दुनिया में।

फुटपाथी सौदागर बनकर, अपना गौरव नहीं मिटाया,

क्यों मैं कहूँ थका हारा हूँ, साहस की झंकार एक है।

स्वार्थ कपट से जो आच्छादित, उनके दिल में है मलीनता,

जिनमें प्यार नहीं मानवता, उनमें कैसे दया शीलता।

वैसा नहीं मैं बन पाया हूँ, अभी नहीं मैं मुरझाया हूँ,

जागो उठो बढ़ो आगे बस, मेरी तो ललकार एक है।

कितने सपने तुम्हें गिनाऊँ, सपनों का अम्बार हृदय में,

सत्कर्मों के बल पर पूरा करने को अधिकार हृदय में।

बीच सफर से साथी बिछड़ा, यादें उनकी प्रबल सहारा,

जियो और जीने दो का बस, सपनों का संसार एक है।

कभी-कभी मन बेकाबू हो, विषयों के आगे झुक जाता,

संकल्पों के तीव्र दबिश में, मन को मुड़ जाना पड़ जाता।

एक अटल विश्वास हृदय में, अरमानों से रिक्त नहीं मैं,

काट रहा भेदों की कारा, सारा जग परिवार एक है।

जाड़े में पुआल के बिस्तर का सुख नहीं भूल पाया हूँ,

3.2 रामावतार साहू जी की वंश परम्परा
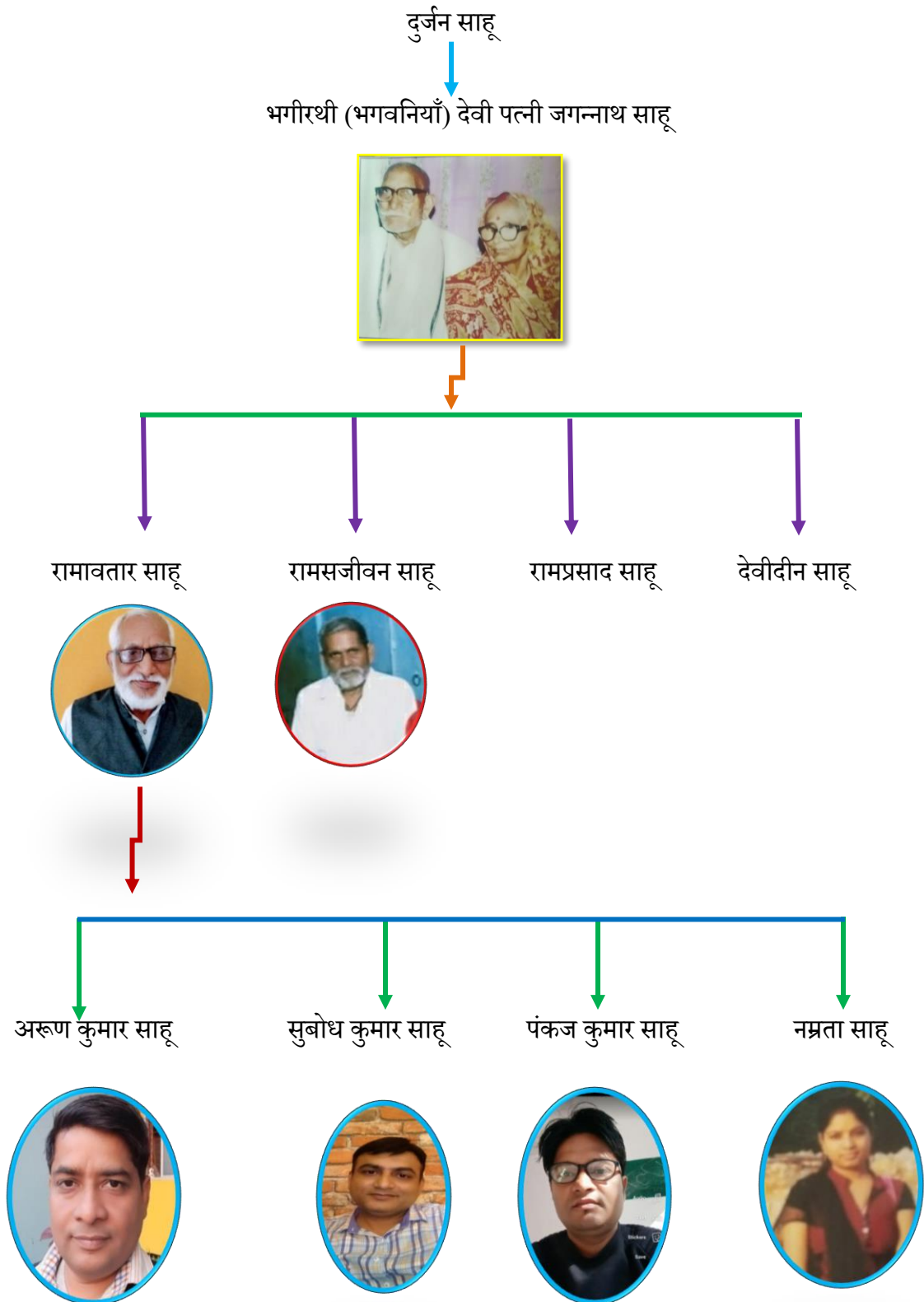
3.3. अध्ययन यात्रा

रामावतार साहू जी ने प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही प्राथमिक विद्यालय, अतर्रा नवीन से पूर्ण की तथा जूनियर हाई स्कूल की पढ़ाई जूनियर हाई स्कूल, अतर्रा (बाँदा) (वर्तमान में ब्रह्म विज्ञान शिशु सदन जूनियर हाई स्कूल अतर्रा) से पूर्ण की। इन्होंने हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की पढ़ाई हिंदू इंटर कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) से की। इन्होंने कला स्नातक, हिन्दी परास्नातक और शिक्षा स्नातक अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बांदा) से किया।
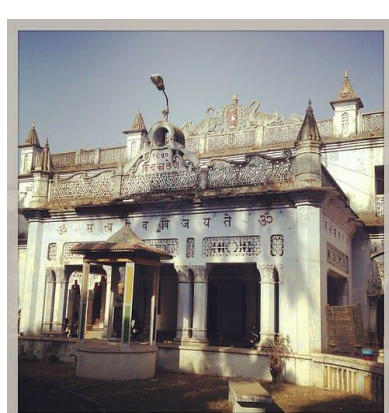
3.4 गृहस्थ जीवन

रामावतार साहू जी की शादी 7 मार्च, 1975 को कुसुम देवी से हुई। कुसुम देवी का निधन 2 मई, 1994 को कैंसर की बीमारी के कारण हो गया।

3.5 अध्यापन यात्रा

रामावतार साहू जी ने अपनी अध्यापन यात्रा का प्रारंभ लोधू थोक, अतर्रा में स्थित श्रीमती बूटू बाई इंटर कॉलेज से किया। इन्होंने यहाँ लगभग पाँच वर्ष तक कक्षा आठ तथा हाई स्कूल में हिंदी, गणित तथा सामाजिक विषय का शिक्षण कार्य किया।

रामावतार साहू जी ने सन् 1995 से चित्रकूट जनपद के रसिन में स्थित सरकारी प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापक के रूप में एक वर्ष तक अपनी सेवाएँ प्रदान की।

रामावतार साहू जी की सरकारी विद्यालय में अध्यापन यात्रा का प्रारम्भ वर्ष 1995 से हुआ। प्राथमिक विद्यालय भाग- 1,रसिन, चित्रकूट में सहायक अध्यापक के रूप में उन्होंने सर्वप्रथम कार्यभार ग्रहण किया, जहाँ उन्होंने लगभग एक वर्ष तक अपनी सेवाएँ प्रदान की। इसके पश्चात् पिताजी की बीमारी के कारण

इन्होंने अपना स्थानान्तरण प्राथमिक विद्यालय, अतर्रा प्राचीन में करा लिया, जहाँ यह पाँच वर्ष तक सेवारत रहे।

इसके पश्चात् इन्होंने अगले पाँच वर्ष तक अपनी सेवाएँ प्राथमिक विद्यालय, लोधौरा में दीं।

तत्पश्चात उनका स्थानान्तरण प्राथमिक विद्यालय, आऊ-1 में हो गया, जहाँ छः वर्ष तक अपनी सेवाएँ प्रदान की।

इसके पश्चात् वर्ष 2013 में सेवानिवृत्ति तक वह प्राथमिक विद्यालय, राजाराम चौरिहा पुरवा में प्रधानाध्यापक के रूप में सेवारत रहे।

3.6 कवि सम्मेलन एवं कवि गोष्ठियों में सहभागिता एवं सम्मान

1. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, बड़ी पुलिया, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश में काव्य पाठ- वर्ष 2000
2. पंडित जे०एन० कॉलेज, बाँदा B.Ed. विभाग में काव्य पाठ- वर्ष 2005
3. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, बाबूलाल चौराहा, बाँदा में काव्य पाठ- वर्ष 2007
4. आवासीय कवि गोष्ठी, नरैनी रोड, अतर्रा में काव्य पाठ- वर्ष 2008
5. आवासीय कवि गोष्ठी, बिसण्डा रोड, अतर्रा में काव्य पाठ- वर्ष 2008
6. राष्ट्रीय कवि गोष्ठी, नरैनी, बाँदा में काव्य पाठ- वर्ष 2008
7. काव्य गोष्ठी वार्ता, सारंग होटल, बाँदा में काव्य पाठ- वर्ष 2015
8. कवि गोष्ठी वार्ता, ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज में काव्य पाठ- वर्ष 2016
9. कवि गोष्ठी वार्ता, राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) में काव्य पाठ- वर्ष 2022

10. सर्व वैश्य चेतना समिति, बाँदा, उत्तर प्रदेश की तरफ से 'एक शाम शहीदों के नाम' कवि सम्मेलन में काव्य गोरव सम्मान- वर्ष 2022
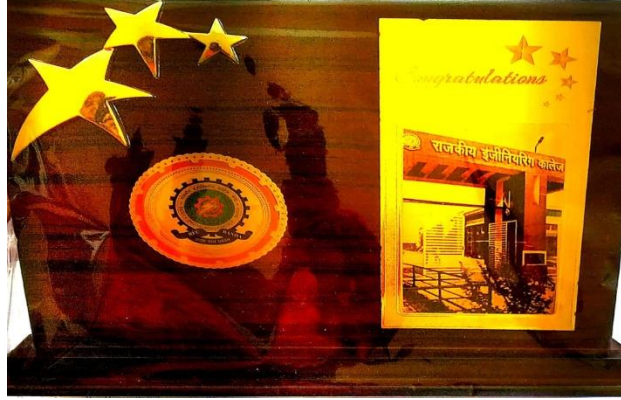
3.7 रामावतार साहू जी की यात्राएँ

रामावतार साहू जी ने अपने जीवन काल में देश के विभिन्न स्थलों की यात्राएं कि है, जिनमें आगरा, दिल्ली, कन्याकुमारी, कोडाईकनाल, मुम्बाई, अमृतसर, वैष्णों देवी आदि प्रामुख है।

3.8 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

रामावतार साहू सामाजिक सरोकारों के प्रति चैतन्य संवेदनशील कवि हैं। उनका हृदय छल-छिद्र से दूर सहजता में रमता है।

3.9 काव्यगत विशेषताएँ

एक सच्चा जनकवि अपनी भावनाओं को शब्दों में उतारते समय न विधा का बंधन मानता है न मानक शब्दों का। जिस विधा में उसके हृदय के भाव अच्छी तरह से व्यक्त होते हैं वही उसकी कविता की विधा हो जाती है।

3.10 रामावतार साहू जी एवं उनके साहित्य के संबंध में अन्य विद्वानों की सम्मतियाँ

रामकरण साहू 'सजल'

- जहाँ तक मेरी जानकारी में आकर पढ़ने को मिला वर्तमान के नवीन कवीय युग में श्री रामावतार साहू एक काव्य लेखन के क्षेत्र में मजबूत स्तम्भ है। वर्तमान की रचनाधर्मिता में उनका बहुत बड़ा योगदान है।
- भाषिक संरचना के अन्तर्गत कवि श्री रामावतार साहू जी ने जो स्वनिर्मित छन्द विधा पर लालित्य लाने के लिए तद्भव, तत्सम, पर्याय, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी, देशज, आँचलिक आदि शब्दों का यथास्थान प्रयोग करने पर अपनी कवि कला की परिपक्वता का पूर्ण परिचय दिया है । कवि के द्वारा भाषा प्रयोग पर हिन्दी के साथ-साथ उर्दू एवं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के शब्दों का भी प्रयोग करने में कहीं कोताही नहीं की है जो काव्य की रोचकता को बढ़ाने में पूर्ण सहायक सिद्ध हो रहा है। शास्त्रीय दृष्टि से कहीं कहीं समचरणों के तुकान्त में अल्पांश रूप में नियम भंग पाए गए हैं किन्तु अक्षर मैत्री की दृष्टि से लयात्मकता में कहीं भी दोष या अवरोध नहीं पाया गया है। कवि ने अपने मात्रा-लाभ तथा अभिव्यक्ति की भरपाई के लिए कहीं-कहीं और के स्थान पर अरु का बेहिचक प्रयोग किया है।

- नेल्सन मण्डेला पर कवि द्वारा लिखा गया महाकाव्य आने वाली नई पीढ़ी को एक

संघर्षशीलता, कर्मठता, ईमानदारी, दूरदर्शिता, लगन, पक्के इरादों को मजबूत करने पर बल प्रदान करेगा। यह महाकाव्य समाज में समता, समानता, बन्धुत्व, भाईचारा की भावना को शक्ति प्रदान करते हुए सम्बल देगा।

डॉ० गया प्रसाद 'सनेही'

- हिन्दी-जगत् में खण्ड काव्य श्रव्यकाव्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। इसे संक्षेपण और विस्तारण की मध्यवर्तिनी शाखा भी कहा जा सकता है। महाकाव्य में जहाँ आठ या इससे अधिक सर्गों का सहारा लेकर विभिन्न प्रासंगिक कथाओं और सन्दर्भों के माध्यम से कथा का विस्तार किया जाता है, वहीं खण्डकाव्य में आठ या इससे कम सर्गों का सृजन करके जीवन के किसी एक चुनिंदा भाग को सारगर्भित काव्य-शैली में चित्रित करने की अविरल परम्परा रही है। शास्त्रीय समीक्षा के अन्तर्गत 'खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकं देशानुसारि च' साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के इस पारिभाषिक सूत्र के आधार पर खण्डकाव्य में समग्र जीवन न ग्रहण कर केवल उसका खण्ड विशेष ही ग्रहण किया जाता है। हमारे यहाँ महाकाव्य अथवा खण्डकाव्य में प्रयुक्त सर्गों को ही खण्ड, अध्याय, समय, पर्व, परिवर्त्य, सोपान, उल्लास आदि कई पर्याय बोधक नामों से सम्बोधित किया जाता रहा है।
- समकालीन सन्दर्भों के सुधी और अयत्नज कवि रामावतार साहू ने छः सर्गों में अपने खण्डकाव्य 'सेवा की अनमोल किरण का छंदोबद्ध सुमनोहर शैली में सृजन करके अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। पद्य-विधा में गहरी पैठ रखने वाले रामावतार साहू तुकान्त-तूलिका के अनुपम चितेरे हैं।
- कविता लिख देने भर से कविता नहीं होती, बल्कि खुद विषय बन जाने से कविता बनती है। इस निहितार्थ को इंसानी ढांचे में ढालकर उसे मूर्त रूप देने वाले बाँदा की माटी के अमिट

हस्ताक्षर रामावतार साहू साधुवाद के पात्र नहीं, अधिकारी हैं। कवि ने जाति धर्म से ऊपर उठकर इस खण्ड काव्य की सर्जना करके साहित्य जगत का बड़ा उपकार किया है।

- काव्य- ज्ञान के लिए शास्त्र-ज्ञान परम आवश्यक है। छंद उस शास्त्र ज्ञान की प्रथम पहचान है। हिन्दी जगत के समस्त छंदों में 'दोहा' सर्वाधिक प्राचीन है; जिसका प्रथम प्रयोग अपभ्रंश काल में 8वीं शताब्दी में सिद्ध साहित्य के आदि कवि सरहपा ने अपने 'दोहाकोश' में किया था। दोहा वह प्रथम लोक-प्रचलित छंद है, जिसमें लय को केन्द्र में रखते हुए तुक मिलाने का नैसर्गिक प्रयास हुआ। निर्गुण संत सम्प्रदाय में इसे 'साखी', सूर-मीरा के यहाँ 'पद-शैली', जायसी-तुलसी के यहाँ 'प्रबन्धात्मक शैली', रीति ग्रन्थों में लक्षण-निरूपण तथा सतसई में 'मुक्तक' के रूप में प्रयुक्त किया जाता रहा है। देशकाल और वातावरण के अनुरूप छन्द-शास्त्र के अन्तर्गत इसे दोहा, दूहा, दोहरा आदि कई मिनजुमले नामों से समलंकृत किया गया, किन्तु आज वह अपने अन्य नामों को दरकिनार करता हुआ केवल 'दोहा' के रूप में रूढ़ हो गया है। छंदशास्त्र की विपुल श्रृंखला में दोहा एक मात्रिक अर्द्धसम छंद है। इसके पहले और तीसरी चरण में 13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11 मात्राएँ होती हैं। विषम चरण के प्रारंभ में जगण नहीं होना चाहिए और सम चरण के अन्त में लघु होना आवश्यक होता है।

- आज के तुकान्त और अतुकान्तगामी साहित्य की बेशुमार भीड़ के मध्य दोहा-शैली में संरचना करना एक जटिल कार्य है। श्री रामावतार साहू जी ने अपनी सारस्वत लेखनी से स्वयंभू बनकर इस विधा को गौरवान्वित करने का जो महनीय कार्य है, वह अनुपम और बेजोड़ है।

- रामावतार साहू अपने मन और मिज़ाज के सुलझे हुए कवि और लेखक हैं। वे लेखक पहले और कवि बाद में है।

- लघुकथा आधुनिक युग की सबसे उपयोगी और चिन्तनशील स्थापित विधा है। यह आकार में लघु होती है किंतु उसमें आदि से अंत तक कथातत्व विद्यमान रहता है। इसीलिए यह अन्य विधाओं की तुलना में समकालीन पाठकों के ज्यादा करीब होती है। यह हितोपदेश, नारे, गल्प, बतकही, किस्सागोई, समाचार, चुटकुले, बोधकथा, कौंधकथा (फ्लैश फिक्शन) आदि से इतर एक ऐसी तीक्ष्ण विधा है; जिसमेंकम-से-कम शब्दों में एक गहरी बात का सुनियोजित जाल बुना जाता है, जिसका अवलोकन और वाचन करते ही पाठक-मन अतिरिक्त चिंतन के लिए उद्वेलित हो जाता है। जिस प्रकार किसी भवन का सुगठित ढाँचा तैयार होने के बाद उसके सौन्दर्य-विधान हेतु साज-सज्जा की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार किसी कथा के विस्तृत कलेवर को काट-छाँटकर उसे लघुकथा में परिवर्तित करते हुए कथातत्वों के माध्यम से पुनश्च पुनश्च सुषमामण्डित किया जाता है।

हाशिए से गुजरते हुए

रामावतार साहू

- आधुनिक काल में भारतेन्दु युग से अपनी बाल-यात्रा प्रारम्भ करने वाली लघुकथा आज अपने समृद्धिकाल पर है। सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर तंज कसते हुए समाज को दिशा-निर्देश देने वाली लघुकथाओं पर अनेकानेक काम हुए हैं; रामावतार साहू इन अनगिनत कामगारों में से एक हैं।
- रामावतार साहू जी ने एक लघु कथाकार के रूप में विपुल जीवन जिया है। उन्हें भूले-बिसरे जीवन की गहरी रंगतो को पकड़ने एवं उन्हें अभिव्यंजित करने का कमाल हाशिल है।
- भाषा कोई भी हो शब्दावली किसी भी भाषा की हो, यदि वह आम प्रचलन में है तो लेखक ने बेखटके उसका प्रयोग किया है। मैं निर्विवाद रूप से कह सकता हूँ कि भाषा एक संस्कार है जो न केवल परिवार और परिवेश से प्रभावित होती है; बल्कि शिक्षा, अध्यवसाय व अभ्यास से परिष्कृत और पुष्ट होती है । लघुकथाकार रामावतार साहू इससे विलग नहीं है। यदि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है तो शैली उस अभिव्यक्ति का प्राण । विचार प्रकट

करने के ढंग या तरीके को शैली कहते हैं। इसे अंग्रेजी में स्टाइल तथा भारतीय काव्यशास्त्र में 'रीति' कहा गया है। लघुकथा रचना में वर्णनात्मक और वार्तालाप शैली का प्रयोग किया गया है।

कुमार सुरेश

- शब्द की अपनी सत्ता होती है। लेकिन सीमा भी होती है। भावनाओं को यथारूप सम्प्रेषित करना एक असंभव कार्य है। इसी असंभव को संभव करने की गहरी इच्छा मनुष्य को कवि बना देती है । कवि अपनी सम्वेदनाओं को शब्दों में पिरोता है और कविता बह उठती है।
- एक सच्चा जनकवि अपनी भावनाओं को शब्दों में उतारते समय न विधा का बंधन मानता है न मानक शब्दों का। जिस विधा में उसके हृदय के भाव अच्छी तरह से व्यक्त होते हैं वही उसकी कविता की विधा हो जाती है। रामावतार साहू जी की कविताएँ विविधवर्णी हैं।

अध्याय चतुर्थ
साहित्य सर्जना

रामावतार साहू जी द्वारा कुल 7 कृतियों की रचना की गई है जिनका विवरण निम्नलिखित हैं—

4.1 'पाषाण बनकर क्या करेंगे'

पाषाण बनकर क्या करेंगे, कविताओं का एक लघु संकलन है। इसकी समस्त रचनाएँ न लक्षणा प्रधान हैं और न व्यंजना, बल्कि सीधी सरल भाषा में अभिधा शक्ति से जुड़ी हुई हैं, जो निम्न पंक्तियों में परिलक्षित होती हैं—

पेट खाली हैं अगर तो गीत गाकर क्या करेंगें?

आपके आमंत्रणों को मानकर हम क्या करेंगे?

आँसुओं को हम छिपाकर मुस्कराकर गीत गाए.

हम स्वयं को भूल बैठे तुम हमेशा याद आए।

दूर हैं मंजिल से यदि विश्राम लेकर क्या करेंगे?

एक चेहरे पर लगे हम सैकड़ों चेहरे उतारे,

कह रहे कुछ लोग हमको हारकर बैठे किनारे,

इन्सानियत की राह पर पाषाण बनकर क्या करेंगे?

बेबसी के जाल को हम काटते हरदम सदा

एक रोटी को भी हम मिल बाँटकर खाते सदा।

जी पुजारी भाग्य के हों, कर्म करके क्या करेंगे?

अनुक्रम

4.2 सृजन के पथ पर

'सृजन के पथ पर' यह उनका दूसरा काव्य-संग्रह हैं। दोहा-बद्ध शैली में लिखा गया यह काव्य-संग्रह 21वीं सदी के द्वितीय दशक की वह सशक्त रचना है; जिसमें कवि ने समाज में व्याप्त असंतोष, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, दुर्व्योहार, संवेदन- शून्यता, संत्रास एवं मैली राजनीतिक गतिविधियों के खिलाफ तीखा किन्तु उदारमना आक्रोश व्यक्त किया है। कथ्य, शिल्प और संदर्भ- चयन की दृष्टि से कवि न तो पूर्व प्रचलित परम्परा का अनुगामी है और न हि उसे किसी रचनाकार की अगली कड़ी के रूप में जुड़ जाने की ललक है। वह कविता के क्षेत्र में मस्तमौला दरवेश है जो बीच बाजार में खड़ा होकर सबकी खैर माँगता है। 'सृजन के पथ पर' नामक दोहा संग्रह पाँच खण्डों में विभाजित है- चर्या, विसंगति, संचेतना, संवेदना और बोध।
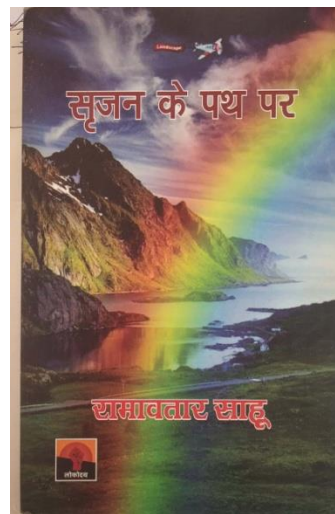
'चर्या' के अन्तर्गत दया, ममता, प्रेम, त्याग, सत्य, अहिंसा, संतोश, स्वाध्याय आदि विभिन्न मानवीय मूल्यों का सहज उद्घाटन किया गया है । कवि की 'चर्या' 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का प्रसाद वितरण करती हैं, अमावस को 'पूनम' में परिवर्तित करती है तथा मानव को रावणमार्ग से हटाकर 'राम-मार्ग' पर चलने की प्रेरणा देती है। यह आवश्यक नहीं है कि इंसान चर्या के नाम पर हर रोज मन्दिर जाय, बल्कि कर्म ऐसे होने चाहिए कि इंसान जहाँ भी जाए, वहीं मन्दिर बन जाय। कवि ने इसी कल्पना को साकार करने के लिए 'मधुमास' का आह्वान करते हुए लिखा है-—

अंधकार की मार से, दिखती कांति उदास।

ऐसी छटा बिखेरिए, छा जाए मधुमास।।

(चर्या, दोहा सं0 80)

'विसंगति' चर्या का सुपालन करते हुए उससे उत्पन्न एक प्रतिक्रिया है। आज हमें खतरा न आन्तरिक युद्ध से है, न किसी विश्वयुद्ध से है और न किसी विदेशी आक्रमण से है, बल्कि सबसे बड़ा खतरा

उस विसंगतिजन्य आतंकवाद से है, जो हमारे हृदय में पनप रहा है। आज आदमी को आदमी से भय है, आदमी को आदमी सुहाता नहीं है; बदहाली यहाँ गई है कि आदमी की तो बात छोड़िए, आज विश्वास स्वयं आदमी पर विश्वास नहीं कर पा रहा है। कवि ने इसी चिन्ता को उजागर करते हुए लिखा है—

दहशत में डूबे सभी, पुरवा पाली गाँव

रौनकता दिखती नहीं, लुप्त प्रेम-सद्भाव।।

(विसंगति, दोहा सं0 199)

'संचेतना' विसंगति का ही अगला क्रियात्मक चरण है। कवि की दृष्टि में शहरों और नगरों के अलावा गाँव में भी स्वार्थ सिद्ध करने वालों की एक पृथक जाति बन गई है। ये लोग अम्बेदकर, जवाहर, लोहिया आदि योजनाओं से प्राप्त आर्थिक सहायता को बहुलांश आपस में बाँट लेते हैं और गाँव की भोली-भाली अपहुँच जनता चुपचाप देखती रह जाती है। कवि ने इस षड़यंत्र को बड़े ही नजदीक से देखा है; तभी तो वह काका की चौपाल में होने वाली कोरी बैठकों पर व्यंग्य करते हुए लिखता है।

काका की चौपाल में, ना विकास की बात।

होती ऐसी गोष्ठियाँ, लगे शान्ति को घात।।

(संचेतना, दोहा सं0 314)

'संवेदना' जीवंतता का सूचक है। मानव की रोजमर्रा आपाधापी के कारण वह संवेदना लुप्तप्राय हो गई है। अब कहीं किसी से टोका-टाकी नहीं होती; रिश्तेदारों-मित्रों का मिलना अब समाप्त हो चुका है, खून के रिश्तों में भी दरार पड़ गई है; एक-दूसरे के सुख-दुःख की चिन्ताएँ समाप्त हो रही हैं; मनुष्य पशु की भाँति संवेदनविहीन जीवन जी रहा है। कवि ने वियोग और पीड़ा के माध्यम से इस दर्द को बखूबी अपने दोहों में दर्शाने का प्रयास किया है। 'दुनिया के जब भीड़ में, खोता मन का मीत।' कवि का यह सवाल आज भी बेशुमार भीड़ में खड़े हुए व्यक्ति को झकझोर रहा है।

'बोध' शब्द तसल्ली या आत्मबोध का पर्याय है। बोध वह फलागम है, जहाँ कवि को इस बात की प्रतीति हो जाती है कि अपने को बदलना धर्म है और दूसरे को बदलना राजनीति। वह राजनीति में न पड़कर तथागत के 'अप्प दीपो भव' का सहारा लेकर आत्मचेतस् के अनुसंधान को बेहतर समझता है। आत्मबोध के लिए विद्या और गुरु से बढ़कर कोई धन नहीं हो सकता। कवि की घोषणा है—

उत्तम गुरु वह है जिसे, नीर-क्षीर का ज्ञान।

वही कराता जगत् को, भली-बुरी पहचान।।

(बोध, दोहा सं0 587)

4.3 सेवा के अनमोल किरण

रामावतार साहू जी ने दुरंत जीवनी शक्ति से परिपूर्ण तथा सेवा की साक्षात् मूर्ति अगनेस गोंझा बोयजिजू अर्थात् मदर टेरेसा के जीवन-दर्शन को लेकर खण्ड काव्य की संरचना की है। उन्होंने कर्ममय जीवन में ही मानवीय सौन्दर्य का दर्शन करने वाली मदर टेरेसा को 'सेवा की अनमोल किरण' का दर्जा देकर उनके सेवा सम्बन्धी कार्यों को विस्तार से व्याख्यायित किया है। 'सेवा की अनमोल किरण' नामक खण्डकाव्य छः सर्गों में विभाजित है - अभ्युदय, पिपासा, प्रवाह, संकल्प, सेवा विस्तार और आत्मोत्सर्ग।
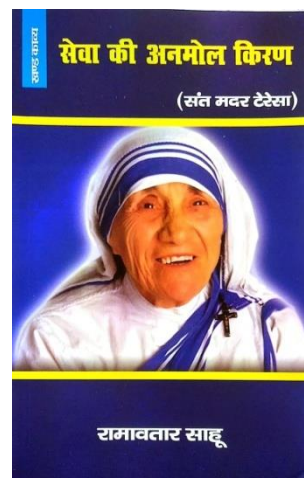
'अभ्युदय' सर्ग के अन्तर्गत महामानवी मदर टेरेसा के जन्म, वंशावली, बाल्यकाल, समुद्री जहाज से भारत आने, यहाँ की नागरिकता स्वीकार करने, कोलकाता को अपना कार्यक्षेत्र चुनने, सेण्ट मैरी विद्यालय में अध्यापन कार्य करने, दार्जलिंग के लोरेटो धार्मिक संस्थान में प्रशिक्षण लेने, मदर का खिताब पाने, मोतीझील जैसी गंदी बस्तियों में सेवा करने, द्वितीय विश्वयुद्ध व भीषण अकाल की त्रासदी झेलने, पटना के 'होली फेमिली

हास्पिटल' में मेडिकल ट्रेनिंग लेने, बच्चों के साथ असीम वात्सल्य प्रदर्शित करने, सेवा का नायाब कुनवा तैयार करने, अनेक विद्यालय व अनाथालय खोलने आदि का विशद् चित्रण किया गया है। उदाहरण के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध की घनघोर त्रासदी और जन-धन की अपार क्षति को देखकर मदर टेरेसा कभी विचलित नहीं हुई। इस विश्व युद्ध का सबसे ज्यादा दुष्परिणाम बंगाल को झेलना पड़ा। बर्मा से आने वाला चावल बन्द हो गया, लोग भुखमरी के शिकार हो गए। मदर टेरेसा ने अपने सहकर्मियों सहित क्षुधा से तड़पते हुए लोगों की सहायता के लिए बुद्ध की परिपाटी में कटोरा लेकर भीख मांगने में किंचित् संकोच नहीं किया—

दिन भर भीख माँग- माँग कर,

भूखेजन की भूख मिटाई।

त्याग-भावना और लगन से

माँ ने निज ममता दर्शाई।।

शिक्षा को विकास की जननी मानकर मदर टेरेसा ने 18 वर्ष की आयु में आयरलैण्ड जाकर आंग्ल भाषा का अध्ययन किया और तदोपरान्त भारत लौटकर 'सिस्टर्स आफ लोरेटो" नामक शैक्षणिक संस्था में शामिल हो गई। उन्हें अंग्रेजी सीखना इसलिए आवश्यक था कि लोरेटो की सिस्टर्स इसी माध्यम से भारत के बच्चों का अध्यापन कार्य करती थीं। लम्बे अर्से तक इस संस्थान में रहने के बाद उन्हें यह एहसास हुआ कि शिक्षा के साथ-साथ दरिद्रनारायण की सेवा भी अनिवार्य है। यही कारण है कि लोरेटो के दायित्व से अपने को मुक्त करते हुए चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा अधिग्रहण करने हेतु वे पटना गईं। मेडिकल ट्रेनिंग में पारंगत होने के बाद उन्होंने चिकित्सालय तथा इससे इतर रूग्णावस्था को प्राप्त वेशुमार मरीजों की सेवा में अपने को तल्लीन कर दिया। पटना अस्पताल का एक दृश्य देखिए, जहाँ पर कवि ने सापेक्ष भाव से यह सिद्ध करना चाहा है कि चिकित्सक और मरीज के बीच कदम्ब - कोरक सम्बन्ध होता है। आज के अर्थ लोलुप संवेदन शून्य चिकित्सकों को मदर टेरेसा से प्रेम, दया, त्याग, ममता और सौहार्द की शिक्षा लेनी चाहिए—

मदर टेरेसा हर मरीज को,

सदा प्यार से देखा करती।

हाथ पकड़कर भावुक होकर,

सदा सान्त्वना देती रहती।।

'पिपासा' सर्ग के अन्तर्गत उपेक्षित, अनाथ, बेसहारा, दिव्यांग, रोगी और विवश मनुष्यों के प्रति सेवा की उद्दाम लालसा मदर टेरेसा के मानस में तड़िच्चालक की भाँति निरन्तर कौंधती रही। परिणामतः पटना के 'होली फेमिली हॉस्पिटल' से प्रशिक्षण लेने के उपरान्त अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शक वेन फादर तथा बंगाली ईसाई माइकल गोम्स की मदद से क्रीमलेन कलकत्ता में अपना निःशुल्क आवास बनाया । कवि ने खण्डकाव्य की ममतामयी नायिका मदर टेरेसा का आलम्बन लेकर समाज की कुछ विसंगतियों की ओर संकेत किया है। आज सामाजिक मूल्यों का बेतहाशा क्षरण हो रहा है। समाज में व्याप्त बाजारीकरण, नशाखोरी और शोषण ने मानव जाति के मोह को भंग कर दिया है। फलतः पिता पुत्र के बीच तनाव है, भाई-भाई के बीच जैचंदी रणनीति है, सेवक स्वामी के बीच अवज्ञा की चहार दीवारी है, दलित-गैर दलित के बीच वर्णभेद का समुन्दर लहरा रहा है। हमारा देश 'मातृदेवो भव, पितृ देवो भव' से चला था, उसका पालन करता हुआ 'प्रातकाल उठि के रघुनाथा, मातु पिता गुरू नावहिं माथा" पर आया, 'फिर हाय हलो, गुडमॉर्निंग, पर आया। अब फादर्स-डे व मदर्स-डे मनाकर माता-पिता को वृद्धाश्रम में धकेलनी वाली आत्मकेन्द्रित और बेशर्म पीढी आगे आ रही है। कवि ने कोलकाता से कुछ दूर पर स्थित सेन्ट मैरी विद्यालय तथा वहाँ के इर्द-गिर्द गाँव में बसे लोगों की संवेदन विहीनता का चित्रण करते हुए लिखा है—

कैसे लोग यहाँ बसते हैं?

बूढ़े त्याग दिए जाते।

छाती का बोझ समझ करके,

मरने को विवश किए जाते।।

उपर्युक्त पंक्तियों में मदर टेरेसा के माध्यम से कवि का सुझाव है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' माँ भारती की विशेषता है। अगर इस मन्त्र को सही अर्थों में साकार करना है तो चाहे जितना बाजारीकरण हो, व्यवसायीकरण हो, वैश्वीकरण हो किन्तु कुटुम्ब को अलग-अलग करके उसे झुठलाकर, उससे मुँह फेरकर विकास की कतार में हम अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं करा सकते।

'प्रवाह' सर्ग के अन्तर्गत सेवा की असली और विराट संस्था 'मिसनरीज आफ चैरिटी' का उल्लेख किया गया है। सेवा का वास्तविक प्रवाह यहीं से प्रारम्भ होता है। कवि ने लोकमंगल की भावना से प्रेरित होकर गरीब, बीमार, वंचित, अनाथ, दिव्यांग, तथा युद्धपीड़ित व्यक्तियों की सेवा और सहायता के लिए मदर टेरेसा द्वारा सन् 1950 में कोलकाता में स्थापित 'मिसनरीज आफ चैरिटी' का सविस्तार चित्रण किया है। यह रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा प्रवर्तित एक धार्मिक और स्वयं सेवी संगठन है। यह भारत तथा भारतेत्तर स्तर पर अनेक विद्यालयों, अनाथालयों, वृद्धाश्रमों तथा अस्पतालों का प्रबन्धन करता है।

सच्चे अर्थों में आज यह 120 से अधिक देशों में विस्तारित तथा मानवीय कार्यों में संलग्न 4500 से अधिक मिशनरियों का महामण्डल है। मदर टेरेसा ने दीन-दुखियों और अनिकेतन जनों की सेवा सुश्रूषा के लिए इस संस्थान की स्थापना करके, महान ख्याति अर्जित की। यह निसर्ग का नियम है कि व्यक्ति के फैलते हुए यश और लोक मंगलकारी कार्यों के विरोध में उसे आलोचना का शिकार होना पड़ता है। अनेक समसामयिक और अर्वाचीन आलोचकों ने संस्था पर धर्मान्तरण का आरोप लगाते हुए चिकित्सा - सुरक्षा के मानकों की तीखी आलोचना की है किन्तु ये आलोचनाएँ उस समय निराधार और निष्प्रभ हो जाती हैं, जब जाँच में नियुक्त तत्कालीन मुख्य चिकित्सा अधिकारी और पुलिस कमिश्नर द्वारा संस्था की गहन छानबीन करके उसे निर्दोष होने का खरा सबूत दे दिया जाता है। वस्तुतः मदर टेरेसा से पूर्व 16वीं शताब्दी के आस-पास ईसाई मिशनरियों का लक्ष्य कुछ भी रहा हो किन्तु मदर टेरेसा के कार्यकाल में इस संस्था का प्रधान उद्देश्य मानवता की सेवा था, धर्मान्तरण नहीं।
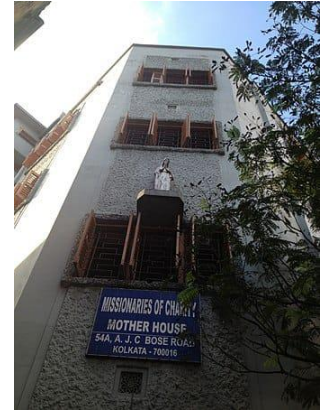
निहितार्थ यह है कि मदर टेरेसा को भले ही रक्त से अलबेनियन, आस्था से कैथोलिक नन, हृदय से यीशु तथा नागरिकता से भारतीयता के संकुचित दायरे में बाँध दिया जाए, किन्तु सही अर्थों में अभिज्ञान की दृष्टि वे विश्व की महान आत्मा और सेवा भाव की अनमोल धरोहर थी।

रामावतार साहू जी ने मदर टेरेसा की इच्छा शक्ति और संचेतना को लेकर 'मिशनरीज आफ चैरिटी के योगदान और उसके अनवरत प्रवाह की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है और इस कार्यदायी संस्था में निहित आज्ञापालन, गरीबी, शुचिता और निर्धन सेवा इन प्रतिज्ञाओं की सल्लेखना करते हुए इसे 'निर्मल हृदय के नाम से संबोधित किया है। उन्होंने आलोचकों के धर्मान्तरण सम्बन्धी मिथ्या आरोपों का दो-टूक शब्दों में जवाब देते हुए तथा संस्था के मौलिक उद्देश्यों की ओर इंगित करते हुए बेबाक घोषणा की है—

भूखे दिव्यांग नयन विरहित,

औ' कुष्ठ रोगियों को अर्पित।

असहाय उपेक्षित जो बेघर,

इन सब के हित में भी निर्मित।।

'संकल्प' सर्ग में 'मोबाइल लेप्रोसी क्लीनिक खोलने, उन्हे निःशुल्क चावल और दूध प्रदान करने, उनके लिए एम्बुलेन्स की व्यवस्था करने, टीटागढ़ में 'गांधी प्रेम निवास नामक क्लीनिक की नीव रखने, मरियम सोसाइटी की स्थापना करने, रिसर्च सेन्टर तथा डिसपेन्सरी खोलने, निर्धन बच्चों के लिए निःशुल्क विद्यालय खोलने, झण्डा दिवस मनाने, अनुदान संग्रह हेतु झण्डा टिकट बांटने, अनब्याही माताओं से जन्म लेने वाले तथा लावारिश बच्चों के लिए पूरे भारत में शिशु भवनों का निर्माण करने, 'मिसनरी ब्रदर्स ऑफ चैरिटी नामक संस्था को सुचार रूप से संचालित करने 'शान्ति नगर' नामक कुष्ठ बस्ती का निर्माण करने आदि अनेकानेक संस्थाओं एवं योजनाओं का व्यापक चित्रण किया गया है| मदर टेरेसा एवं उनके सहकर्मियों द्वारा भीख - याचना से निजात दिलाने के

लिए कुष्ठ रोगियों को बढ़ईगीरी, कपड़ा बुनने सिलाई, कढ़ाई आदि का कार्य भी दक्षता एवं कुशलतापूर्वक सिखलाया जाता था।

वास्तव में कुष्ठ रोग माइकोबैक्टीरियम लेप्राई जीवाणु से उत्पन्न एक घातक और संक्रामक बीमारी है। यदि इसे अनुपचारित छोड दिया जाए तो यह गम्भीर कुरूपता और महत्त्वपूर्ण दिव्यांगता का कारण बन जाता है। आज भारत, चीन, जापान, नेपाल, रोमानिया, सोमालिया, तथा वियतमान आदि देशों में कुष्ठ बस्तियों का अम्बार छाया हुआ है। उस जमाने में छुआछूत और घृणा की भावना से कुष्ठ रोगियों को बस्ती से बाहर निकाल दिया जाता था। वे चोंगा पहने, हाथ में घण्टी लिए उसे बजाते हुए चलते थे। जिससे लोग यह समझ जाए कि कुष्ठ रोगी आ रहा है और वे उससे दूर हट जाएँ, कवि ने इस जड़िमाग्रस्त धर्मान्धता पर निर्ममता पूर्वक कुठाराघात किया है और “Touch the leper with compassion” अर्थात् 'कुष्ठ रोगी को करुणा से छुओ का महामंत्र देते हुए उनसे रुहानी रिश्ता कायम करने का संदेश दिया है—

धर्म- लिंग कटु जाति-भेद की,

नहीं किसी से करें बात।

है लक्ष्य एक सेवा करना,

दें पीड़ा से सब को निजात।।

'सेवा विस्तार- सेवा का उपसंहार सर्ग है। 'उदारचरितानां त वसुधैव कुटुम्बकम्' पंचतन्त्र के इस ध्येय वाक्य के आधार पर सेवा की दिशा आत्मचेतस से विश्वचेतस् की ओर प्रस्थान करती हुई दृष्टिगोचर हुई है। खण्डकाव्य की नायिका को इस बात का एहसास है कि 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है, जो मुझमें है वही सब में है । अनेक झंझावातों और विवादों को चीरते हुए उन्होंने अपने सेवा की शान्ति-यात्रा कोलकाता से प्रारम्भ की तथा रोम, आस्ट्रेलिया, यूगोस्लाविया, जार्डन, ब्रिटेन, रूस, अमेरिका, डेनमार्क इजरायल, पोलैण्ड, रोमानिया, ईथोपिया, फिलिस्तीन, वियतनाम, नेपाल बांग्लादेश आदि शताधिक देशों में अपनी सेवा की सुगंध बिखेर दी। मिशन और चैरिटी के विस्तारण में उनका शरीर अवश्य थक गया था, किन्तु मन की उड़ान ने कभी हार नहीं मानी। मदर टेरेसा भारत की नहीं अपितु विश्व की वह

प्रथम साहसी महिला हैं, जिन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पद्मश्री, भारतरत्न, रेमन मेटासेस, पोप जॉन शांति, आर्डर ऑफ ब्रिटिश इम्पायर, नोबेल पुरस्कार, आर्डर आफ मेरिट, नोबेल आफ फ्रीडम, सन्त आदि विभिन्न पुरस्कारों उपाधियों व अलंकारों से समादृत किया गया। उन्होंने सम्मान समारोहों से अर्जित धन को दीन दुखियों की सेवा में आवंटित कर उनके मुरझाए हुए मन में जिजीविषा की नई किरण बिखेर दी। कुल मिलाकर 'एकहिं धर्म एक व्रत नेमा' को धुरी मानकर कवि ने मदर टेरेसा के बहाने अपना अन्तिम मन्तव्य प्रस्तुत करते हुए लिखा है—

माँ की फैली कीर्ति जगत में,

जन-जन के दिल में छाई।

मानवता की देवी बनकर,

संत शिरोमणि कहलाई।।

'आत्मोत्सर्ग' में मदर टेरेसा के महाप्रयाण का कारुणिक दर्शन है। दो-दो बार हृदयाघात होना, रीढ़ व ग्रीवा की अस्थियों का असंतुलित होना, आत्मीय जनों का परलोक सिधार जाना, पद्मश्री और नोबेल जैसे पुरस्कारों को निस्पृह भाव से अंगीकार करना, चलने में अशक्त हो जाना, विस्तर की अविचल सहचरी बन जाना आदि हृदय विदारक दृश्य बिम्ब उनकी जीवन लीला के अन्तिम सोपान है। अन्ततोगत्वा दिवा रात्रि मानवता का पाठ पढ़ने और पढ़ाने वाली इस समाज सेविका ने सेवा की एक अन्य अनमोल रत्न बहन निर्मला के हाथ में शेष सेवा कार्य की बागडोर सौंपकर सदा-सदा के लिए निर्वाण की शाश्वत गोद में समा गई। 'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति' के मूल मन्त्र के आधार पर यद्यपि वे आज हमारे बीच नहीं हैं

किन्तु उनकी कालजयी आहट आज भी करोड़ों मनुष्यों के रोम-रोम में गूँज रही है। उनकी अविस्मरणीय गहन स्मृतियाँ रह-रह कर हमारे घरों में सेवा का दस्तक दे रही हैं। इस जगत में मरणशील तो सभी हैं किन्तु स्मरणशील कोई-कोई हुआ करता है इन कोई-कोई में से मदर टेरेसा एक थी।

उस दिन माँ ने की प्रार्थना,

जिस दिन था अंतिम प्रस्थान।

जनमानस सब सुखी स्वस्थ हों,

माँ के थे हार्दिक अरमान।।

प्रार्थना के पश्चात् तुरत,

सीने में दर्द उठा भारी।

निष्फल हुए प्रयास सभी,

सांसे बन्द हुई सारी।।

4.4 पगडंडियों से राजपथ तक

यह पुस्तक गजल, गीत, छंद और छंद मुक्त कविता का संयुक्त गुलदस्ता है। जहाँ तक मानक भाषा के बंधन का सवाल है, ये कवितायें उसकी आन भी नहीं मानती हैं। इनमें हिंदी के मानक शब्दों के प्रयोग के साथ जरूरत अनुसार देशज शब्दों का भी सुंदर उपयोग हुआ है। जहाँ जरूरत हो वहाँ बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी के शब्दों से भी रचना मुखर होकर बोलती है—
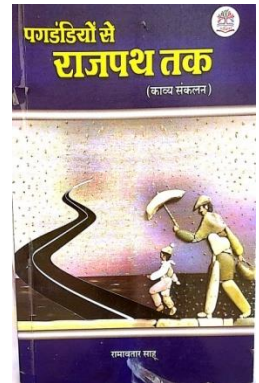
'मचा हुआ है इतना भर्रो,

कि जिसका कुछ अंदाज नहीं है।

सर से गायब हुए मुलइठा,

बिरहा के सरजात नहीं है।

और- 'इनके ट्रेनरों ने इनको कर दिया प्रशिक्षित है/एक अनहोनी सोच को बरकरार कर लिया'

रामावतार साहू की अधिकांश रचनायें हिंदी ग़ज़ल के प्रारूप में हैं लेकिन बीच-बीच में छंद मुक्त कविता भी दिखाई देती है। **'गंगा तट में'** उनकी एक 'छंद मुक्त' कविता है—

'कहते हैं गंगा के

किनारे लूट मची है

कुछ गरीब तबके के लोग

देते हैं गंगा में

चढ़ाने के लिए

सिर्फ 5 रुपये में फूल पत्ती।

गंगा की आरती उतारने के लिए

देते हैं घी से लिपटी हुई

दीप के साथ एक वर्तिका

सिर्फ 5 रुपये में।'

इस रचना में उनका गरीबों और वंचितों के प्रति समर्थन और सहृदयता साफ दिखाई देती है। उनकी और भी रचनायें हैं जो जन पक्षधर एवं गरीबों के कष्टों के प्रति मुखर हैं। नयी हवा में बदल रहे गाँव और ग्रामवासियों का संघर्षपूर्ण जीवन उनकी कविताओं का विषय है। कविता 'दहशत के साए में' मैं वो लिखते हैं–

कुछ लोग हमारे गावों में

कब से जी रहे अभावों में

दहशत के साए में जीते

है नमक न मरहम घावों में।

यह कविताएँ हमारे आज के सरोकारों पर भी मुखर होकर बोलती हैं। वर्तमान में चल रहे 'कोरोना' के संकट पर भी उनकी कलम ने पर्याप्त लिखा है। कविता ‘कोरोना काल में श्रमिक' में उन्होंने श्रमिकों की हाल में हुई दुर्दशा का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। एक और कविता 'दहशत के दायरे में' है, इसमें कोरोना ने जो सारे विश्व में दहशत फैलाई है उसका परिचय दिया गया है। अंग्रेजी की एक कहावत है जिसमें इस संसार को एक रेस्टरों की तरह बताया गया है। कुछ लोग सुबह का नाश्ता करके चले जाते है। कुछ लंच तक रुकते है। कुछ डिनर तक रुकते है। जो जितनी देर ठहरता है उसे उतना ही ज्यादा भुगतान करना पड़ता है। रामावतार साहू ने अपने जीवन में परिवारजनों एवं मित्रों का विछोह सहन किया है। इसलिए उनकी कुछ कविताएँ स्मृति गीत की तरह है। कुछ कविताओं में दुनिया के अनुभवों की परछाई भी नजर आती है—

'जितने रिश्तेदार हैं ये सब बिछड़ने के लिए,

स्वार्थ के रंग में रंगे हैं सब बिगड़ने के लिए।

पेट खाली हैं अगर तो गीत गाकर क्या करेंगें?

आपके आमंत्रणों को मानकर हम क्या करेंगे?

आँसुओं को हम छिपाकर मुस्कराकर गीत गाए,

हम स्वयं को भूल बैठे तुम हमेशा याद आए।

दूर हैं मंजिल से यदि विश्राम लेकर क्या करेंगे?

एक चेहरे पर लगे हम सैकड़ों चेहरे उतारे,

कह रहे कुछ लोग हमको हारकर बैठे किनारे,

इन्सानियत की राह पर पाषाण बनकर क्या करेंगे?

बेबसी के जाल को हम काटते हरदम सदा एक

रोटी को भी हम मिल बाँटकर खाते सदा।

जी पुजारी भाग्य के हों, कर्म करके क्या करेंगे?

4.5 हाशिए से गुजरते हुए

हाशिए से गुजरते हुए पुस्तक में लिपिबद्ध समग्र लघु कथाओं के जातीय वैशिष्ट्य और प्रवृत्तिगत नतीजों को केन्द्र में रखते हुए उन्हें छः खण्डों में वर्गीकृत किया गया है- 'आप बीती', 'भूले बिसरे', 'परिवर्तन', 'संकल्प', 'जो मन चंगा' और 'बेजुबान'। यह अपने ढंग का एक अनोखा प्रयास है।
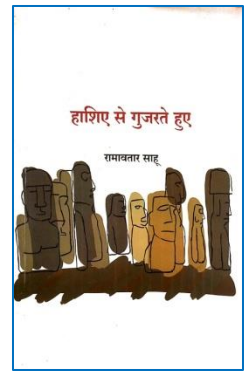
आस-पास खण्ड में लगभग एक दर्जन लघुकथाओं का घटना चक्र रेखांकि किया गया है। जहाँ आत्मकथा में कोई लेखक अपने ही द्वारा अपने ही जीवन का वर्णन करने वाली लम्बी कथा का सिलसिलेवार ब्योरा देता है, वहीं लघुकथा अन्तर्गत 'आस-पास शीर्षक में लेखक ने स्वयं पर गुजरने वाली घटना का चित्रण करने के साथ-साथ अपने आस-पास की गैरबीती समाजगत परिस्थितियों का स्वाभाविक उद्घाटन किया है। विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक नहीं जँचता कि लघुकथा एक लेखक-विहीन विधा है अर्थात् उसमें लेखक को कहीं दृश्यमा नहीं चाहिए। सच्चाई तो यह है कि अपनी अधिकांश रचनाओं में लेखक परोक्षतः उपस्थित रहता है। 'भय का भूत' और 'यादे ही यादें' जैसी लघुकथाओं में तो लेखक स्वयं एक पात्र के रूप में मौजूद होकर पूरे कथानक की अगुवाई करता हुआ दिखाई देता है। 'गऊ की पीड़ा' व 'आहत' जैसी लघु कथाएँ आहे सर्दी के रूप में जहाँ एक ओर अपने ही दर्द का चिट्ठा खोलती है; वहीं दूसरी ओर धरमू, धीरज, बूढ़ी माँ का बँटवारा, बदनाम गली, संवेदनहीनता, दर्द और टामी जैसी लघुकथाएँ अपने ही समाज में यत्र-तत्र विखरे हुए जीवंत पात्रों का ज्वलंत दस्तावेज प्रस्तुत करने में समर्थ हुई हैं। लघु कथाकार का

यह जनवादी सपना मध्यम वर्गीय समाज को आत्मचेतस् से विश्वचेतस् की ओर प्रस्थान करने का अभिनव संदेश देता है।

भूले-बिसरे इस संकलन का द्वितीय खण्ड है। रामावतार साहू जी ने एक लघु कथाकार के रूप में विपुल जीवन जिया है। उन्हें भूले-बिसरे जीवन की गहरी रंग को पकड़ने एवं उन्हें अभिव्यंजित करने का कमाल हाशिल था। 'बूढ़ा बालक' लघुकथा में 70 वर्षीय रघुवीर द्वारा याद दिलाए जाने पर लेखक का भूले-बिसरे ना जी के सुझाए मार्ग पर चलना; 'दायित्व' लघुकथा में परलोकगामिनी अर्धांगिनी के वात्सल्य पूरित संस्मरणों का याद करके लेखक द्वारा लेखन कार्य को दरकिनार करते हुए हठीली बच्ची के गृहकार्य को पूरा करवाना, 'यादें' लघुकथा में बूढ़े और सेवानिवृत्त रामनारायण द्वारा घर में पर्याप्त संसाधनों के रहते हुए भी पुरानी जर्जर कबाड़ साइकिल का निरंतर प्रयोग करना आदि दृष्टांत भूले-बिसरे चित्रों के मोहक बिम्ब प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार 'विचित्र मिलन' लघुत्तर कथा में जब लेखक का अपने पुराने लंगोटिया यार रामबाबू से आकस्मिक मिलन और आलिंगन होता है तो दोनों ही अपने पास खड़े हुए पूर्व अंग्रेजी शिक्षक श्यामलाल की अनुशंसा में तारीफों का पुल बाँधने से नहीं अघाते। लेखक ने श्याम लाल जी का परिचय देते हुए कहा "अरे यार, यही तो पूज्य गुरू जी श्यामलाल जी हैं, जो हमारे साथ खड़े हैं। दस वर्ष पूर्व जिला विद्यालय निरीक्षक के पद से सेवा-निवृत्त हुए हैं।"

समग्रतः 'भूले-बिसरे' खण्ड में अन्य अवशेष लघु कथाओं के माध्यम से लेखक ने व्यक्ति, परिवेश और समृति का जैसा मार्मिक चित्रण किया है, अन्यत्र दुर्लभ तो नहीं किन्तु कठिन अवश्यक है।

'परिवर्तन' खण्ड संख्यात्मक दृष्टि से अन्य समस्त खण्डों की तुलना में सर्वाधिक वृहद् है। इसमें भावधारा और जीवन मूल्यों से जुड़ी हुई कुल 15 लघुकथाओं को प्रमुखता से सहेजा गया है। परिवर्तन समाज में चलने वाली एक अनवरत् प्रक्रिया। इस प्रक्रिया से समाज की संरचना और कार्यप्रणाली में एक नई नक्काशी का जन्म होता है। इस वर्ग की लघुकथाओं आत्मचेतस तथा विश्वचेतस दोनों ही प्रकार के परिवर्तनों का शंखनाद किया गया है। अछूत, सहृदयता, आत्मीयता, सहानुभूति, घर का पियून, पत्थरों के बीच तथा निर्मलधारा जैसी लघुकथाओं में सुनियोजित तरीके से व्यक्ति विशेष में होने वाले परिवर्तन की चिनगारी

डालकर उनके आत्मचेतस को जगाने का नैसर्गिक प्रयास किया गया है। यहीं पर गाँवदारी, गाँव की सुगंध, शिक्षा की ज्योति, बदलाव और कैशियर की शादी जैसी चुनिंदा लघु कथाओं में कबीर पंथियों की भाँति समाज के समग्र ढाँचे में आमूल चूल परिवर्तन का महाशंख फूंकते हुए मध्यवगीय समाज को विश्वचेतस के सोपान पर आरूढ़ होने का संकेत दिया गया है। कुछ परिवर्तन आकस्मिक हुए हैं तो कुछ कल्पना से परे और कुछ परिवर्तन ऐसे जिनकी भविष्यवाणी संभव थी। इन लघुकथाओं में कुछ सामाजिक परिवर्तन साफ तौर पर दृष्टिगत हैं, जबकि कुछ परिवर्तन ऐसे हैं जिन्हें स्थूल आँखों से देखा तो नहीं जा सकता किन्तु गूँगे की शर्करा की भाँति केवल अनुभव किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'कैशियर की शादी' यदि दृष्टिगत है तो 'एहसास' मात्र अनुभूति का विषय है।

'परिवर्तन' खण्ड की सभी कथाएँ परिवर्तन के इसी प्रगतिशील दायरे में आती हैं। लेखक ने इसी बदलाव और रद्दोबदल को आदि से अंत तक खंगालने का प्रयास किया है। परिवर्तन के केन्द्र में यह बात सदैव स्मरण रखनी चाहिए कि नकारात्मक लोगों पर तो रामबाण चलाया जा सकता है किन्तु महा नकारात्मक पर रामबाण चलाना लोहे के चने होंगे। यह सभी जानते हैं कि जड़ समुद्र को समझाना आसान था किन्तु रावण जैसे महारथी पर हितोपदेश की कोई औषधि काम नहीं आई।

'संकल्प' खण्ड में वर्णित समस्त लघु कथाओं में अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही प्रकार के संकल्पों पर रोचक ढंग से विचार किया गया है। 'फ मौला', ‘तपसी’ तथा ‘तंरगायित मन' शीर्षकों में आवश्यकता कसौटी में रखते हुए पुनर्विवावह का सवाल उठाया गया है किन्तु संतति के रहते हुए विमाता के प्रकोप से बचने के लिए विधुर पुरुषों द्वारा तर्कपूर्ण शैली में उसका खण्डन किया गया है। उदाहरण के लिए 'हरफन मौला' लघु कथा में सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त विधुर शिवाकांत से लेखक ने जब दूसरी शादी रचाने का प्रस्ताव रखा तो उसने साफ इंकार करते हुए कहा, "क्यों भाई, मेरे बच्चों जिंदगी नष्ट करने का रास्ता बता रहे हो? सुख-दुःख जीवन के दो पहलू होते हैं। अभी तक सुख का आनंद लिया है, अब दुःख का अनुभव करने दो।"

टस से मस न होने वाला उसका यह संकल्प आज के दायित्व विहीन काम लोलुपों को निश्चित ही गार्हस्थ्य जीवन की निर्मल कर्मठता का संदेश देता है। समाज में कभी-कभी पारंपरिक बुजुर्गों को अपना संकल्प तोड़कर 'पुत्रात् शिष्यात् पराजयम्' के सिद्धांत को शीर्ष में रखते हुए बच्चों के संकल्प का ख्याल रखना पड़ता है। 'एक शब्द' लघु कथा में अपने बालिग बच्चे के विवाह हेतु बुजुर्ग पिता को चाहे अनचाहे लड़की कम पसंद थी किन्तु बालिग बच्चा उस लड़की को मजनू की आँख से देख रहा था। परिणामतः पिता को बालिग बच्चे की पसंदगी का ख्याल रखते हुए उसके संकल्प को पूरा करना पड़ा।

व्यक्ति का उत्कृष्ट होगा या निकृष्ट, यह उसके संकल्प अथवा विचार से ही निर्धारित होता है। 'भौं-भौं' लघु कथा में राजनीतिक अहं का खोखला स्वांग रचने वाले दो बस यात्रियों के कलहपूर्ण संवाद और उनके काँव-काँव का चित्रण है; जिसमें लेखक के अनुसार बस-सीट लेकर मानो वीररसधारी दो शेर अपनी-अपनी सत्ता की दावेदारी कर रहे हों। साहित्याचारियों ने ऐसे निष्फल प्रयोजनधारी बलधारियों के उत्साह को निम्न कोटि के रस की संज्ञा दी है। किसी शास्त्रकार ने कहा भी है—

"यन्मनसा चिन्तयति, तत् वाचा वदति।

यत् वाचा वदति, तत् कर्मणा करोति।

यत्कर्मणा करोति, तद्धिसंपद्यते।"

व्यक्ति जैसा चिन्तन करता है, वैसा ही बोलता है; जैसा बोलता है, वैसा ही कर्म करता है; जैसा कर्म करता है, वैसा ही उसका जीवन हो जाता है। इसी खण्ड में 'ड्रामा' रचना के अन्तर्गत अवसरवादी सामंत पूँजीपतियों की मिथ्या बयानबाजी और खोखले वादों का ढिढोरा पीटा गया है। वे अपने प्रतिकूल संकल्पों की भरभाई में अड़े हुए हैं। इसके प्रतिरोध में मध्यमवगीय तपके द्वारा ईमानदारी के साथ पुरुषार्थजन्य मूल्यों को स्थापित करने का संकल्प दोहराया गया है। 'धीरू' लघु कथा का अधिकारिक पात्र धीरू स्वयं नकारात्मक संकल्प वाला व्यक्ति है, जो अंत तक मद्यपान करना नहीं छोड़ता।

इस प्रकार लघुकथाकार ने संकल्प शीर्षक को केन्द्र में रखते हुए इस खण्ड में समाहित अन्य लघुकथाओं में वृत्ति और विचार के आधार पर संकल्प के अनेकानेक पहलुओं का तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत

किया है। "जो मन चंगा', 'हाशिए से गुजरते हुए' नामक पुस्तक का पाँचवां खण्ड है, जिसमें मात्र लघुकथाओं का नायाब गुलदस्ता तयार किया गया है। हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के लोकप्रिय निर्गुण कवि संत रविदास की लोकवाणी 'जो मन चंगा तो कठौती में गंगा' आज भी अखिल जनमानस का स्थायी कंठहार है। लघु कथाकार रामावतार साहू के मन और वाणी को बाँचने के बाद उनकी कुछ लघुकथाओं को 'जो मन चंगा' शीर्षक के अंतर्गत रखना संपादक को उपयुक्त जान पड़ा। हम आजादी के 74 साल बाद भी जातिवाद, क्षेत्रवाद, नस्लवाद और सम्प्रदायवाद की गठरी बाँधे घूम रहे हैं। 'फर्ज' लघुकथा में शुद्ध विचारों वाले भवानी शंकर ने अपने जिन बेटों व नाती-पोतों को पाल-पोष कर बड़ा किया, उन्हें अपने पैरों के बल खड़ा किया. वे आज भवानीशंकर को पनाह देने से इनकार कर रहे हैं, फिर भी भवानी शंकर ने 'हिम्मत वंदे मदद खुदा' को मील का पत्थर मानकर कभी अप्रसन्नता का इजहार नहीं किया। 'सहपाठी' लघुकथा में लेखक को इस बात का दर्द सदैव बेचौन किए रहता है कि उनके शिक्षक बनने के बाद उनके बचपन के पूर्व बेरोजगारी साथी पाठशाला की गली-कूचों में रोज मिलते हैं, उनसे रामजुहार भी होती है किन्तु प्यार और ममता की डोर इतनी कमजोर है कि एक प्याली चाय के लिए वे अपने घर कभी नहीं बुलाते। शायद उनकी कठौती में केवल जल है, गंगा नहीं। इसी प्रकार 'सुखी दद्दा' में दद्दू के नाम से विख्यात सुखवीर चन्द्र काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से विरक्त होकर 'जो मन चंगा तो कठौती में गंगा' का सम्यक् पालन करते हुए दिखाई देते हैं।

इस खण्ड की सबसे चर्चित रचना 'लकड़हारिन' है। लकड़हारिन का चरित्र इतना साफ, स्वच्छ और निर्मल है कि एक बार वह अपने ऊपर कलुष दृष्टि वाले एक मनचले व्यक्ति पर शेरनी की तरह टूट पड़ी और उसे अधमरा कर दिया। उसने उस व्यक्ति पर तंज कसते जो कांटा सम्मित उपदेश दिया था, उसे सुनकर आज के भ्रष्ट देह व्यापारी अपनी घिनौनी हरकत के छुटकारा पा सकते हैं। उसने सिर्फ यही कहा, "हम लकड़हारिन हैं, मेहनत की रोटी खाती हैं, मेरा नाम नगनियां है। मेरे गाँव वाले मुझे नागिन भी कहते हैं । अब भविष्य में किसी नागिन को छेड़ने की कोशिष मत करना। मुझे मेरी लकड़ियों के तीन सौ रुपये दो। मैं थाना - कचेहरी नहीं जाऊँगी। ध्यान रखना, नारी के बहुत रूप होते हैं।"

'गुणवत्ता' और 'सम्बन्ध' जैसी लघुकथाओं में भी थोड़े बहुत हेर फेर से इसी प्रकार की विसंगतियों का रेखांकन किया गया है। इस लघुतम खण्ड में लेखक की यही अवधारणा है कि यदि आप का मन शुद्ध है,

पवित्र है तो घर के कठौते में गंगा का स्वरूप सरलता से देखा जा सकता है और यदि आप का मन एकांत नहीं, शुद्ध नहीं तो साक्षात् गंगा में अवगाहन करने से आप का मन कदापि चंगा नहीं हो सकता।

'बेजुबान' जनवादी लघु कथा संकलन का अंतिम और षष्ठ खण्ड है। 'बेजुबान' व्याकरणिक दृष्टि एक अव्ययपरक शब्द है, जिसका अर्थ है- गूंगा या मूक; किन्तु साहित्यिक परिक्षेत्र में यह प्रायः लाक्षणिक अर्थ में व्यवहृत होता रहा है। वस्तुतः जुबान रहते हुए भी जो किसी बात का विरोध या प्रतिक्रिया न करके चुपचाप उसे सह लेता है, उसे बेजुबान की संज्ञा दी जाती है। यह अलंकारिक दृष्टि से विभावना का सूचक है। इस खण्ड में समाहित समस्त लघुकथाओं के संज्ञाधारी पात्र जुबान रखते हुए भी बेजुबान का प्रत्यक्ष संकेत देते हैं। मनोविज्ञान के आधार पर जब व्यक्ति की परिवेशीय दशाएं अनुकूल नहीं होती तो उसमें शील गुणों का सकारात्मक अवरुद्ध होता है और ऐसी अवस्था में उसके 'स्व' का यथोचित परिमार्जन नहीं हो पाता।

इस खण्ड की प्रथम लघुकथा 'मजबूर मजदूर' मजदूरों की दिहाड़ी को लेकर अभिजन समाज द्वारा अपनाई शोषणकारी अनैतिकता का प्रलेख प्रस्तुत करती है; जिसके चलते बेजुबान मजदूरों को अपनी दैनिक मजदूरी से हाथ धोना पड़ा। 'बेजुबान' खण्ड में लेखक द्वारा सामाजिक मूल्यों के विघटन का मुद्दा उठाया गया है। आज हम 'मदर्स डे फादर्स डे' का औपचारिक जश्न भले मना ले किन्तु हमारे बुजुर्गों, माता-पिताओं और वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान नहीं दिया जा रहा है क्योंकि समकालीन नव्य पीढ़ी का यह मानना है कि हमारे बुजुर्गों और माता-पिता की सोच बड़ी उरानी-पुरानी है; उन्हें बदलती हुई दुनिया के हिसाब से जीने का न कोई शऊर है और न सलीका। वह बड़े धडल्ले से कहता है—

"यह कहकर बेटा करे, उल्टे-सीधे काम।

है उसूल इस देश में, किस चिड़िया का नाम।।"

राजहंस होटल के भव्य उद्घाटन में बड़े बेटे के द्वारा ख्याति प्राप्त बुजुर्ग पिता रामसेवक को न बुलाया जाना इसी संवेदनशून्यता का सीधा प्रमाण है। इसी प्रकार हृदय पर सीधा प्रहार करने वाली लघुकथा 'राहत' में निष्ठु संतानों द्वारा अपने ही घर के असहाय वृद्ध माता-पिता के प्रति नकारात्मक रवैया अपनाना इसी संस्कृति का पोषक है। 'लाचार जिंदगी' में जहाँ एक ओर घर से तिरस्कृत और बहिष्कृत 80 वर्षीय अपंग ननकू की

भारी बोझिल जीवन-शैली का चित्रण है; वहीं दूसरी ओर 'यातना' लघुकथा में आठो याम घर का काम करने वाली दस वर्षीय अनाथ नाबालिग बालिका की रोज-रोज अमानवीय प्रताड़ना का अक्स खींचते हुए उसके चीत्कार को संलाप शैली में रेखांकित किया गया है।

यह वही खण्ड में जहाँ की प्रचुर बानगी देने में कथाकार का मन खूब रमा है। कभी-कभी कुछ-कुछ जानकर अनजान रहना पड़ता है और कभी-कभी बहुत कुछ जानकर भी बेजुबान रहना पड़ता है। वैज्ञानिक दृष्टि से आप चाहे सातवाँ आसमान छू लें किन्तु गणेश का दूध पीना और बिल्ली का रास्ता काटना कभी बंद नहीं होगा। समाज में अंध परंपराओं की आज भी तूती बोलती है। 'हिरिया की शादी' लघु कथा में घर की विदाई से लेकर श्वसुरालय जाने तक तीन हाथ का घूँघट काढ़ने वाली लज्जाप्रिय हिरिया के द्वारा अपनी बीमारी के विषय में ससुराली जनों के समक्ष निर्वाक् और मूक बने रहना इसी जडिमाग्रस्त अन्तर्मुखी मानसिकता का द्योतक है।

'मैकी' कथा रचना में मैकी एक वंचित, उपेक्षित, चूर्णित, मर्दित और बेजुबान महिला है। अपने युवा काल में वह जारकर्म का शिकार हो गई थी। जारकर्म से उत्पन्न सुधाकर उसी संतान है। बड़े घर में पालित-पोषित सुधाकर आई०पी०एस० अधिकारी बन गया है। आज मैकी उसी के वैभवपूर्ण जयमाल कार्यक्रम में बर्तन माँजने वाली सेविका के रूप में तैनात की गई थी। वह बार-बार आश्चर्य से सुधाकर को निहार रही थी, किंतु इस कोख जन्य दुर्घटना को केवल मैकी ही जानती थी । इसके अलावा सारी दुनिया अनभिज्ञ थी। वह भी औरों की भाँति सुधाकर आशीर्वाद देना चाहती थी। फटे पुराने पैबंद कपड़ों से मर्यादा को ढके हुए साहस बटोरकर जैसे ही वह मंच पर पहुँची, निष्ठुर लोगों ने उस अबला को अपमानित कर मंच से उतार दिया। लघुकथाकार ने मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के सवाल का खुला हवाला करते हुए लिखा है। "मैकी अगर साहस करती तो धोखेबाज प्रेमी को मैकी को अपनी पत्नी स्वीकार करना पड़ता, लेकिन मैकी उस वर्चस्व प्रधान और फैशन परस्त समाज के सामने अपनी जुबान न खोलसकी।"

लघुकथाकार को मानव ही नहीं, अपितु मानवेतर पशु-पक्षियों की भाषा को भाषा वैज्ञानिकों की तरह अपने ढंग से सहेजने का कौशल हासिल था। 'कोउ काहू का नाही' लघुकथा में क्षेत्रीय ग्राम्य भाषा में चर्चित

डेवकी नामक पक्षी को जब दादी माँ दाना चुँगा रही थीं तो जिज्ञासु लेखक द्वारा यह पूछे जाने पर कि ये क्या कह रही है; दादी माँ बोली, "बबुआ, ये कहती है, "कोउ काहू का नाहीं, कोउ काहू का नाहीं।" सच है, इस स्वार्थ- संकुल संसार में कोई किसी का नहीं है।

इस प्रकार 'बेजुबान' खण्ड की समस्त लघुकथाएँ जन-जीवन की किसी न किसी बिडम्बना को उजागर करती हैं। आजादी के बाद हमारे चारों ओर जिस सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक और शैक्षणिक सत्र का निर्माण हुआ है, मनुष्य उसके तंत्र जाल में फँसकर शिकार की तरह छटपटा रहा है। किसी अज्ञात शायर ने कहा है—

"कुछ बेजुबान चीजों में भी जान डाल दे खुदा,

लोग अक्सर इनके सहारे, अपने झूठ छुपाते हैं।"

अतः आज के इस लोकतंत्र में समता के वितान में चहल कदमी करने के लिए दो कदम गैर जुबान वालों को, तो दो ही कदम जुबान वालों को भी आगे आना पड़ेगा।

4.6 राहें नेल्सन मण्डेला की

नेल्सन मण्डेला महाकाव्य की विषय वस्तु को तेरह भागों में विभाजित किया गया है एवं प्रत्येक भाग को परिच्छेद शब्द से सम्बोधित किया गया है। कवि अपनी भावना के साथ उस महापुरुष का सम्पूर्ण वर्णन बहुत ही सावधानी पूर्वक करता हुआ दिख रहा है। जन्म स्थल का बाखूबी एवं प्रकृति सौन्दर्य को बहुत ही सुन्दर भावों से दिखाते हुए कहा—
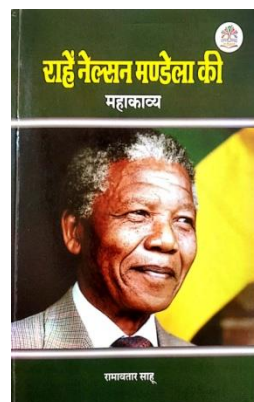
"दिनभर का सफर पूर्ण करके,

रवि था प्रमुदित अस्ताचल में।

माँ-बेटे पहुँचे कैजवैनी,

कान्ती बिखरी मुखमण्डल में।"

महाकाव्य के द्वितीय परिच्छेद पर नेल्सन मण्डेला के युवा काल का वर्णन करते हुए जोहान्सवर्ग शहर जो सोने का शहर कहा जाता रहा है उस पर प्रवेश कराते हुए उस शहर का पूर्ण वर्णन अपने अभूत पूर्व शब्दों में व्याख्या करते हुए वहाँ की स्थिति को दर्शाकर काफी नजदीक से लिखने का सफल प्रयास किया है।

शासन के द्वारा अश्वेतों के साथ किया जा रहा भेद-भाव देखकर नेल्सन मण्डेला का ह्दय द्रवित हुआ वह श्रमिकों के साथ होकर शासन के विरुद्ध चल रही गतिविधियों में संलिप्त हो गये। कवि ने बहुत सावधानी पूर्वक उनके सफल एवं असफल क्रियाकलापों को लिखा तथा अपनी काव्य रचना में संकेत किया—

"हड़ताल नहीं यह सफल हुई,

शासन ने इसको कुचल दिया।

घटना से नई सोच जागी,

जिसने कुंठा का शमन किया।"

नेल्सन मण्डेला के साथ जितने भी स्वतन्त्रता सेनानी थे उनमें राष्ट्रप्रेम की भावन कूट-कूट कर भरी हुई थी सभी आजादी के दीवाने लग रहे थे पूरे हर्षोल्लास के साथ आजादी के गीत उच्च स्वर में गाते एवं सभी दोहराते ऐसा सुन देखकर मण्डेला अति प्रसन्न होते तथा उत्साहपूर्ण आंदोलन को मिलकर सभी लोग संचालित करते रचनाकार ने संकेत किया—

"आजादी के गीत ओजस्वी,

बुई सिली गाया करते थे।

इनके साथ सभी सेनानी,

मिलकर दोहराया करते थे।"

नेल्सन मण्डेला सभी दबे कुचले शोषित कमजोर अश्वेतों के सबसे ज्यादा नजदीक थे उसका कारण वह उन्हीं के साथ रहते उन्हीं के बीच अपनी बात कहते हर प्रकार से जो कर सकते थे वह उनके लिए करते जिसका कारण यह था कि मण्डेला स्वयं श्रमिक थे और उन सबके साथ रहकर कार्य करते नेल्सन के सेवाभाव को रचनाकार ने बहुत सुनियोजित ढंग से लिखा—

"उन श्रमिकों के खातिर नेल्सन,

अक्सर चाय बनाते थे।

इन लोगों से खुद नीचा,

अपने को ही दर्शाते थे।"

मण्डेला के साथ-साथ उनकी पत्नी को भी शासन के कोपभाजन का शिकार होना पड़ा। नेल्सन के जेल में रहते हुए उनकी पत्नी विनी मण्डेला को भी शासन ने गिरफ्तार करवाकर जेल में डाल दिया उस घटना क्रम का कवि ने स्पष्ट शब्दों में उल्लेख करते हुए शासन की नीति और नियत को लिखा—

"आतंकवाद अधिनियम तहत ही,

किया विनी को गिरफ्तार।

इसके अन्तर्गत शासन को,

मिले हए थे अति अधिकार।"

आन्दोलन के अन्तिम चरण पर गति प्रदान करने के लिए गुप्त बैठकें होती जिसमें पूरी रणनीति को नेल्सन अन्तिम रूप देते। आन्दोलन शासन को पूरी तरह से तबाह कर चुका था जिसके कारण वार्ता के बाद शासन ने काफी प्रतिबन्ध हटाए थे जिसको कवि ने लिखा—

"गुप्त वार्तालाप समिति से,

नेल्सन रहे सदा मिलते।

शाश्वत एक दीप बन करके,

तम में रहे सदा जलते ।”

अन्तिम परिच्छेद पर रामावतार साहू जी लिखते हैं—

“प्रथम बने उपराष्ट्रपति मैकी जी ने है शपथ लिया,

द्वितीय बने उपराष्ट्रपति डी क्लार्क महोदय शपथ लिया।

शपथ दिलाई गई इन्हें जब नेल्सन की आई बारी,

गणतन्त्र देश के राष्ट्रपति बने हुए राष्ट्र के आभारी।

सेवक बनकर जनहित में आजीवन कटिबद्ध रहेंगे,

वादा किया यही नेल्सन ने उद्देश्यों को पूर्ण करेंगे।"

4.7 फूल पत्थर तोड़ते हैं

रामावतार साहू जी की यह पुस्तक प्रयागराज के रुद्रादित्य प्रकाशन में प्रकाशाधीन है।

इस पुस्तक की एक कविता **समय** शीर्षक की निम्नलिखित है—

समय के ही साथ चलिए

जिंदगी गतिमान करिए

बेवजह खुद को न कोसो

टूटिए मत धैर्य रखिए

वक्त कब विश्राम करता

इसकी कुछ गरिमा समझिए

दायरों से मुक्त है यह

भाग्य से ही दूर रहिए

समय को हम काटते हैं

भूल कर ऐसा न कहिए

वक्त को पहचानिए बस

खूबसूरत रंग भरिए

गिर पड़े तो रोइए मत

समय को उठकर पकड़िए।
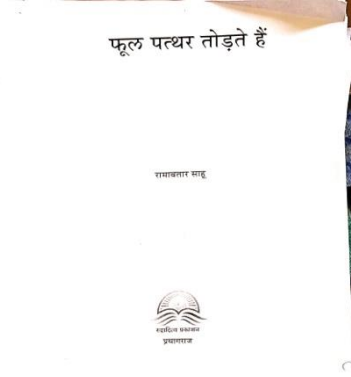
पञ्चम अध्याय

साहू जी की प्रेरक कविताएँ

साहू जी ने कुल 7 पुस्तकों की रचना की है| कविता उन क्षणों की देन है, जब हम कुछ कहना चाहते हैं-भावना के क्षेत्र में, शब्द के क्षेत्र में या अर्थ के क्षेत्र में मेरी दृष्टि में साहित्य ही एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ कठिन, शुष्क, दुःखात्मक विषय भी बड़े सरल, सरस और कोमल ढंग से प्रस्तुत किए जाते है क्योंकि साहित्य का सरोकार मनुष्य की संवेदना से होता है। इसी संवेदना को अपनी पूँजी मानते हुए मैंने किसी के मर्म पर चोट नहीं की, बल्कि उसे पुष्ट करने का ही प्रयास किया है।

साहू जी की काव्य रचनाओं में अनेक कविताएँ शैक्षिक महत्व की है जो विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगी|

5.1 युग गान बन जाओ

बन सको तो एक तुम पहचान बन जाओ
हो सके तो दर्द में मुस्कान बन जाओ।

जहर के सैलाब आते हैं नज़र काफ़ी
छोड़ दो हैवानियत इन्सान बन जाओ।

भेद में भीगी हुई इन्सानियत दिखती
मिटे भ्रष्टाचार वह अभियान बन जाओ।

कुछ पलों की चमक में मग़रूर हो बैठे
प्रीति के प्रतिरूप का प्रतिमान बन जाओ।

ज़िन्दगी जीना है गर तो मत बनो अजगर
मैल मन का साफ कर युगगान बन जाओ।

परम सत्ता का करो दीदार अपने हृदय में
सतकर्म सेवा भाव से भगवान बन जाओ।
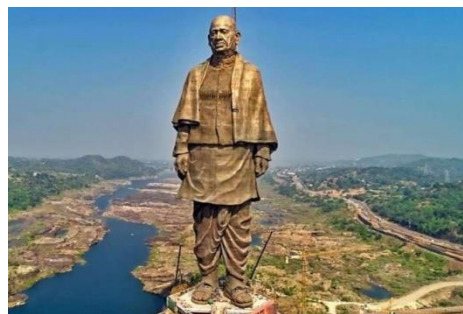
5.2 वर्तमान

वर्तमान में ध्यान लगाएँ, वर्तमान डिगने न पाए,

वर्तमान का रूप सँवारें वर्तमान गिरने न पाए।

दृढ़ संकल्पों पर आधारित, वर्तमान की पूँजी श्रम है,

इसे सजाएँ सद्भावों से, वर्तमान दबने न पाए।

भावों के अनुरूप सदा पहचान बनाए ही रहना है।

रखें ख्याल कि बदनामी से वर्तमान जुड़ने न पाए।

मेहनत और लगन से ही वर्तमान खिलता फलता

गौर करें कि भाग्यवाद से वर्तमान मिलने न पाए।

वर्तमान को जिसने साधा गिरकर उठकर मंज़िल

पहुँचे वर्तमान को जीवन समझें, वर्तमान मरने न पाए।

युग पुरुषों की जीवन गाथा लगता है कि वर्तमान है

ऐसा हम कुछ कर दिखलायें वर्तमान दफ़ने न पाए।

5.3 जलाओ दीप तम में

यदि जलाना है जलाओ दीप तम में

यदि निभाना है निभाओ साथ गम में।

प्रीति की बौछार बन सीचों धरा

आगे रहो बढ़ते, मत पड़ो भ्रम में ।

ज़िन्दगी जीना अगर तुम चाहते हो

जीत के ही तुम हमेशा रहो क्रम में।

इन्सानियत से बढ़के कोई नहीं पूजा

मत गँवाओ समय को झूठे धरम में।

एक ही मालिक है दूजा है न कोई

जो सदा रहता है तुम में और हममें।

सन्मार्ग में शूलों का मिलना लाज़िमी है।

हर परिस्थिति में रहो तुम सदा सम में।

5.4 रोशनी

जितने रिश्तेदार हैं ये सब बिछुड़ने के लिए

स्वार्थ के रंग में रंगें हैं सब बिगड़ने के लिए।

एक रिश्ता है जिसे कहते हैं हम इन्सानियत

जो कभी मिटता नहीं शाश्वत महकने के लिए।

चार दिन की चाँदनी में स्वयं को मत भूलिए

रोशनी जो मिली हमको तम से लड़ने के लिए।

रास्ते तो साफ हैं खुद खो रहे भटकाव में

शब्द ढाई प्रेम का खुद संभलने के लिए।

प्रीति बिन हर जिंदगी है नरक जैसी

झूठ के संग सफ़र सारा बस तड़पने के लिए।

5.5 रोटियों के सवाल

आजकल साथी मेरे बेहाल हैं

ज़िन्दगी काँटों भरी जंजाल है।

तप रहे हैं रोज लोहे की तरह

पूछने जाता न कोई हाल है।

तरबतर रहते पसीने से सदा

पोछने को भी नहीं रुमाल है।

रोज प्रातः चौक में बिकते दिखाई

ये हमारे तंत्र की ही ढाल हैं।

प्रीति की छाया नहीं मिलती इन्हें

रोटियों के ही विकट सवाल हैं।

5.6 अभावों में जीवन

घाव नहीं मिटते हैं कभी बयानों से

प्रीति नहीं मिलती है कभी दुकानों से।

जीते हैं जो आज अभावों में जीवन

बहुत त्रस्त हैं पत्थर दिल इन्सानों से।

टूट गए हैं भार समस्याओं का लादे

वंचित हैं अब भी विचार की धारों से ।

अख़बारों में पढ़ते इनकी पीड़ाएँ

फँसे हुए हैं भेदभाव के जालों से।

पूजे जाते हैं चुनाव के दौरों पर

मोह लिए जाते है सुन्दर गानों से।
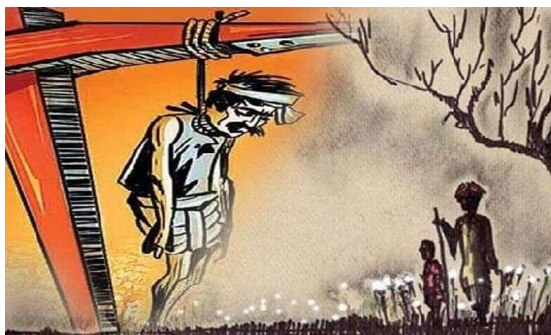
5.7 देते नहीं बबूल मधुर फल

पत्थर को ही पत्थर कहिए

पूजा खातिर नहीं भटकिए।

देते नहीं बबूल मधुर फल

झाड़ झाड़ियों से ही बचिए।

श्रम साधक सत के अनुगामी

इनसे कभी विमुख मत रहिए।

दिल का हुजरा अगर साफ है

अंधकार से प्रीति न करिए।

अगर तुम्हें लगना है तट में

जर्जर किश्ती नहीं पकड़िए।

कामिल मुर्शिद राह दिखाते

इनकी शिक्षाओं पर चलिए।

प्रतिमाओं के अंकित सद्गुण

निश्चय उनको सिजदा करिए।

5.8 सृजन की राह पर

क्यों दोष मढ़ते हो हवाओं पर

खुद छिड़कते नमक घावों पर।

समय को बदनाम मत करिए

गीत लिखिए हर विधाओं पर।

बेवजह मत भाग्य को कोसो

कुल्हाडी मत मारिए पाँवों पर।

सृजन की राह पर रहिए

न जलिए भेद भावों पर।

बैसाखियों पर छोड़ दें चलना

पार जाना बैठना मजबूत नावों पर।

5.9 पाँव हैं अपनी जमीं पर

पाँव हैं अपने जमीं पर यही क्या कम है।

नजर है अपनी सभी पर यही क्या कम है।

कल के सारे भवन फट के हो गए खण्डहर

नाव अपनी है नदी पर यही क्या कम है।

हमने जितने घर सजाए कर दिए खाली

रात कटती है दरी पर यही क्या कम है।

वक्त कुछ खाली न जाए ख्याल रखते हैं

ध्यान रखते हैं घड़ी पर यही क्या कम है।

कौन कहता है कि मरने के लिए आए

भाव पावन दृढ़ कड़ी पर यही क्या कम है।

हम उसूलों का कभी सौदा नहीं करते

खार के संग है हँसी पर यही क्या कम है।

हम तुम्हारी नज़र में जीते अभावों में

एक जैसे सुख गमी पर यही क्या कम है।

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध **"रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान"** के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं-

- रामावतार साहू जी का बचपन अत्यंत गरीबी में बीता, फिर भी इन्होंने अपनी मेहनत और लगन से शिक्षा स्नातक और हिंदी परास्नातक तक की शिक्षा पूर्ण की।
- साहू जी ने अपनी सेवायोजन यात्रा अस्थाई रूप से श्रीमती बूटू बाई इण्टर कॉलेज, लोधू थोक, अतर्रा से प्रारंभ की, जहाँ उन्होंने लगभग पाँच वर्ष तक शिक्षण कार्य किया। तत्पश्चात् वे स्थाई रूप से सरकारी प्राथमिक विद्यालय में नियुक्त हो गए।
- रामावतार साहू जी ने अपने जीवन काल में आगरा, दिल्ली, कन्याकुमारी इत्यादि देश के विभिन्न स्थलों की यात्राएँ की हैं।
- रामावतार साहू जी ने छ: पुस्तकों (पाषाण बन कर क्या करेंगे, सृजन के पथ पर, सेवा की अनमोल किरण, पगडंडियों से राजपथ तक, हाशिए से गुजरते हुए, राहें नेल्सन मण्डेला की) की रचना कर हिंदी साहित्य की विपुल सेवा की है तथा उनकी लेखनी अभी भी अनवरत जारी है।
- रामावतार साहू जी सामाजिक सरोकारों के प्रति चैतन्य एवं संवेदनशील कवि हैं। उनका हृदय छल-छिद्र से दूर सहजता में रमता है। उनके इसी स्वभाव का परिचय उनकी कविताओं में मिलता है।
- साहू जी वर्ष 2013 में सेवानिवृत्ति हो जाने के बाद पूरी तरीके से साहित्य के क्षेत्र में उतर गए और किताबों में अपने मन के भावों को शब्दों का रूप दे डाला।
- रामावतार साहू जी कवि सम्मेलन एवं कवि गोष्ठियों में सहभागिता कर अपने काव्य की छटां बिखेरते रहते हैं।

- साहू जी ने विद्यार्थी एवं जन सामान्य के लिए अनेक प्रेरक गीतों की रचना की।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

- रामावतार साहू जी के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि जीवन में कितने भी अभाव, कठिनाई, गरीबी इत्यादि के बाद भी लगन, परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प से उच्च शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।
- साहू जी की सेवायोजन यात्रा से हमें यह सीख मिलती हैं कि अध्ययन यात्रा पूर्ण होने पर किसी भी सेवायोजन से, भले ही वह कितना ही छोटा एवं अस्थाई प्रकृति का ही क्यों ना हो जुड़ जाना चाहिए तथा उसमें रहते हुए निरन्तर उन्नति का प्रयास करना चाहिए। एक ना एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी।
- प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में जब भी अवसर मिले भ्रमण एवं यात्रा पर जाना चाहिए। इससे हमें देश की सभ्यता एवं संस्कृति को निकट से जानने का अवसर मिलता है। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है। अनेकता में एकता एवं वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन हमें संस्कृत यात्राओं के दौरान मिलते हैं विद्यालयों द्वारा प्रत्येक स्तर का विद्यार्थियों को दूर-दराज (भिन्न सांस्कृतिक परिषद से परिचित कराने हेतु) भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए।
- व्यक्ति को जीवन में कुछ ना कुछ करते रहना चाहिए, लगन शील व्यक्ति मुकाम पर पहुँचता ही है, हमें भी साहू जी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर किसी क्षेत्र विशेष में निरंतर अपना योगदान करते रहना चाहिए।
- हमें भी साहू जी की भांति पर्यावरण तथा समाज के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, तभी सही अर्थों में राष्ट्र का विकास संभव है।

- प्रायः सेवानिवृत्ति के पश्चात् व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है, किंतु साहू जी ने स्वयं को साहित्य लेखन की साधना में डुबो दिया। हमें भी इससे प्रेरणा लेकर आजीवन कुछ ना कुछ उपयोगी करते रहना चाहिए।
- साहू जी के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें भी अपने अंदर विभिन्न गुणों का विकास करना चाहिए तथा विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेकर समाज एवं राष्ट्र को लाभान्वित करना चाहिए।
- शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में साहू जी के प्रेरक गीतों को सम्मिलित किया जा सकता है।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर हम कह सकते हैं, कि यह अध्ययन शिक्षा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी महती उपयोगिता रखता है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में जब मानवीय मूल्य और प्राचीन भारतीय संस्कृति केवल किताबों में सिमट कर रह गए हैं। छात्र अति भौतिकवादी परिवेश में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण अपने सदाचार और संस्कारों को विस्मृत करते जा रहे हैं। तब इस संक्रमण काल में छात्रों के आधारभूत मूल्यों और संस्कारों तथा नैतिकता को समाविष्ट करने में यह लघु शोध प्रभावी सिद्ध होगा। जहाँ पर शिक्षा और साहित्य दोनों का समावेश हो जाता है। वहाँ पर प्रगति के सारे मार्ग प्रशस्त एवं दृष्टिगोचर होते हैं।

रामावतार साहू जी का दृढ विश्वास है कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक समन्वय से शिक्षा इक्कीसवीं शताब्दी में अपने नवीन आदर्श स्थापित करेगी तथा मानवीय मूल्य केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर बालकों में संस्कार रूप में दृष्टिगोचर होगे। लघु शोध-प्रबंध में शिक्षा एवं साहित्य को एक ही सिक्के के दो पहलू बताया गया है। जो समाज में प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु तथा भावी आदर्श नागरिकों के निर्माण हेतु आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन संस्कृति शिक्षा को समन्वित कर प्रदान करके हम स्वस्थ एवं शैक्षिक समाज का निर्माण कर सकते हैं।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- भावी शोध में साहू जी की कविताओं में निहित मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुंदेलखण्ड के अन्य कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में कवि रामावतार साहू जी के साथ अन्य कवियों के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिंदी भाषा के प्रसिद्ध कवि रामावतार साहू जी के शैक्षिक योगदान पर आधारित है, भावी शोध में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

तिवारी, बाबूलाल (1996-97)। वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/10744>

सिंह, नीलम(1999)। भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान वर्तमान समय में उपादेयता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/12268>

मिश्रा, शशि (2002)। समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/11762>

वर्मा, रामनिवास **(2005)** । भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय आगरा (उ०प्र०) <http://hdl.handle.net/10603/361860>

शर्मा, शशिकांत (2007)। गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/12530>

सिंह, किरन (2008) रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता आलोचनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/178440>

सिंह, अनन्त बहादुर (2008)। मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/239635>

सिंह, रेनू (2008)। *भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)*। <http://hdl.handle.net/10603/12262>

तिवारी, सुधा (2009)। *लोकतान्त्रिक भारत कि शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)*। <http://hdl.handle.net/10603/14905>

शादाब, आबी (2009)। *जाकिर हुसैन एवं ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)*। <*http://hdl.handle.net/10603/235529*>

साहू, रामावतार (2017)। *पाषाण बनकर क्या करेंगे।* लखनऊ: लोकोदय प्रकाशन।

साहू, रामावतार (2018)। *सृजन के पथ पर।* लखनऊ: लोकोदय प्रकाशन।

साहू, रामावतार (2019)। *सेवा की अनमोल किरण।* लखनऊ: लोकोदय प्रकाशन।

साहू, रामावतार (2020)। *पगडंडियों से राजपथ तक।* भोपाल: सरोकार प्रकाशन।

साहू, रामावतार (2022)। *हाशिए से गुजरते हुए।* प्रयागराज: कामायनी प्रकाशन।

साहू, रामावतार (2022)। *राहें नेल्सन मण्डेला की।* भोपाल: जे.एम. डी. ग्राफिक्स।

यदि जलाना है जलाओ दीप तम में,

यदि निभाना है निभाओ साथ गम में।

प्रीति की बौछार बन सींचो धरा,

आगे रहो बढ़ते, मत पड़ो भ्रम में ।।

ISBN : 978-93-5906-245-7